बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

अगस्त, 1987

रु. 2.50

सहमा हुआ कल

चित्रः फरहान मुजीब

एटम बम.....कभी नहीं !!

6 अगस्त, 1945 की सुबह जापान के टोकियो नगर से कुछ दूर मूली के एक खेत में जापानी नौ सेना के रेडियो संचालकों ने एक संकेत पकड़ा। ऐसा ही एक संकेत कोई तीन सप्ताह पहले भी पकड़ा गया था, संकेत एक अमेरिकी हवाई अड्डे से आया था। याद रहे, यह समय था दूसरे महायुद्ध का, जो सन् 1939 से चला आ रहा था। पर संचालकों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

उधर हिरोशिमा नगर रोजमर्रा के कामों की तैयारियों में व्यस्त था। घरों में नाश्ता बन रहा था। हिरोशिमा 4 लाख की आबादी वाला एक सुंदर शहर माना जाता था। चारों तरफ सुंदर, ऊंचे पेड़ थे। तभी एयर रेड का भोंपू बज उठा। यह चेतावनी थी कि दुश्मन के हवाई जहाज़ आ रहे हैं। पर ऐसे भोंपू लगभग रोज ही बजते रहते थे। लोग आसमान पर एक नजर डालते और फिर अपने-अपने काम में लग जाते। हां, आज आकाश में काफी ऊंचाई पर एक अमेरिकी हवाई जहाज़ जरूर मंडरा रहा था। आमतौर पर ऐसे एक हवाई जहाज का मतलब होता था कि वह मौसम की जानकारी एकत्रित करने वाला हवाई जहाज़ है। कुछ देर बाद भोंपू बंद हो गया।

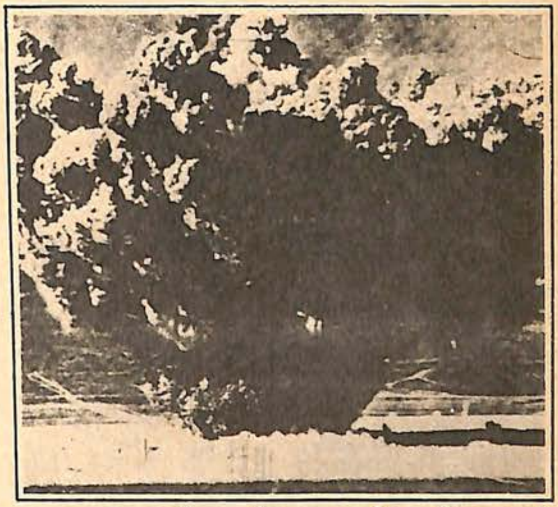

वह सचमुच मौसम की जानकारी एकत्रित करने वाला हवाई जहाज़ ही था। इसके कुछ समय बाद तीन और हवाई जहाज़ आए। संभवतः पहले हवाई जहाज़ ने ही इन्हें मौसम की जानकारी दी थी। पूरे जापान देश पर बादल छाए हुए थे। लेकिन हिरोशिमा नगर के ऊपर आसमान साफ था।

तीन में से एक हवाई जहाज़ में एटम बम था, जिसका निशाना हिरोशिमा तय किया गया था। यह भी तय था कि अगर बादल होंगे तो बम नहीं गिराया जाएगा, क्योंकि ऊपर से कुछ दिखेगा नहीं।

सुबह कोई सवा आठ बजे 'इनोला गे' नामक हवाई जहाज़ ने अपना बम फेंक दिया- एटम बम। 43 सेकेण्ड बाद यह बम पृथ्वी से 1850 फुट की ऊंचाई पर फट गया। ऐसी रोशनी चमकी जैसे कई सूरज एक साथ निकल आए हों। थोड़ी ही देर बाद धुएं और आग का बादल कुकरमुत्ते के आकार में 40,000 फुट तक ऊपर उठ गया (देखो पहले पेज पर दोनों चित्र -यह प्रयोग विस्फोटों के चित्र हैं, पहला ज़मीन के नीचे विस्फोट का दूसरा, पानी के नीचे का)।

हिरोशिमा का लगभग 10 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र मानो पिघल कर गायब हो गया, क्योंकि जहां बम गिरा, उसके आसपास का तापमान कई लाख डिग्री सेल्सियस था।

एक शहर नष्ट हुआ, 70,000 से अधिक लोग मारे गए, हज़ारों को जान लेवा रोगों ने घेर लिया। इस तरह संसार में एटम बम ने अपनी हाजिरी दर्ज की।

इस अंक की अधिकांश सामग्री इसी विनाशगाथा को बताने वाली है। हिरोशिमा का एटम बम आजकल के बमों के मुकाबले एक बच्चा था। आज कई हज़ार ऐसे शक्तिशाली बम तैनात हैं, जिन्हें अपने निशानों को खोजने से बादल, पानी और खराब मौसम भी नहीं रोक सकते। ये बम हवाई जहाज द्वारा नहीं, मिसाइलों से गिराए जाएंगे।

ऐसी हालत में संसार के लोग इस नारे के अलावा क्या कर सकते हैं?

बम हथियार- नहीं ! नहीं !
एटम बम- कभी नहीं !

बहुत कुछ कर सकते हैं। तुम सुझाओ!!

इस अंक में

पाठक लिखते हैं	3
चकमक दोस्त	4
कागज के हज़ार पक्षी	5
माथापच्ची	8
स्टार वार	10
कविता : मुस्कान बम	15
मेरा पन्ना	16
खेल खेल में कला	17
मेरा पन्ना	19
कविता : पढ़ाकू घोड़ा	21
मेरा पन्ना	22
कहानी : सहमा हुआ कल	25
आश्चर्य लोक में एलिस	29

आवरण : कैरन

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3, अंक 2 अगस्त, 1987
संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण:
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

मई अंक में 'अंधविश्वास' तथा 'जय शनि महाराज' बहुत अच्छे लगे।
आशुतोष व्यास, पिपरिया; विनोद पोरवाल, कुकड़ेश्वर, मंदसौर; दामोदर दयाल शर्मा, पीपरीमूढ़, मुरैना; श्याम रावत, सेगवाल, खरगोन; झावेन्द्र कुमार ध्रुव, बलौदा बाजार पहन्दा.

अंधविश्वास : प्रतिक्रियाएं

संसार का शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहां अंधविश्वास ने जड़ न जमाई हो। जिस प्रकार से हमारी पारिवारिक परंपराएं होती हैं एवं हम उनका पालन अनिवार्य रूप से करते हैं, उसी प्रकार से अंधविश्वास भी समाज की जड़ों में गहराई तक नजर आता है।

इन अंधविश्वासों की उत्पत्ति हुई कहां से? हमारे मन को छोटा किन्तु जटिल प्रश्न कचोटता है। अधिकतर अंधविश्वासों की उत्पत्ति समय के साथ-साथ होती रही और क्रमशः परिवार या किसी संप्रदाय से उठकर सारे देश में हवा की तरह फैल गई।

इनकी गहराई में जाएं तो एक ही उत्तर दृष्टिगोचर होता है, कि बच्चा समाज में जन्म लेकर, उस समाज के धर्म, भाषा, परंपराओं के अनुरूप ढल जाता है और इन्हीं गुणों के साथ-साथ अंधविश्वास भी अपनी गहरी पैठ जमा लेते हैं, और वह आज्ञाकारी सेवक की भांति शकुन-अपशकुनों का पालन करता है।

जरूरत इस बात की है कि अंधविश्वासों की परंपराओं को तोड़ा जाए।

□ महिपाल सिंह बुंदेला
दसवीं, देरी जखीरा, टीकमगढ़,
□ अब्दुल परवेज खान
पंधाना, खंडवा

मैं अंधविश्वास के विरोध में हूं। सब तरह के अंधविश्वास टूटने चाहिए। हर युग के अपने अंधविश्वास होते हैं। अंध विश्वास का भी फैशन होता है। हर युग के अंधविश्वास नए प्रकार के हो जाते हैं। पुराने अंधविश्वास से आदमी छूटता है और नए को पकड़ लेता है, लेकिन अंधविश्वास कभी नहीं छूट पाता है। बदलावट कर लेता है उसमें अंतर कर लेता है लेकिन यह बात हमारे ध्यान में नहीं आती है।

अंधविश्वास पकड़ने में भी मजा आता है और उसे तोड़ने में भी। अंधविश्वास पकड़ने में यह मजा आता है कि हम सोचने से बच जाते हैं, झंझट से बच जाते हैं, जो सभी मान लेते हैं, हम भी मान लेते हैं। हम पूछना भी नहीं चाहते कि क्या कारण है, क्यों है? कौन परेशानी में पड़े, जहां भीड़ चलती है, हम भी चले जाते हैं। अंधविश्वास सुविधापूर्ण मालूम पड़ता है।

फिर कुछ लोग अंधविश्वास को तोड़ने में लग जाते हैं, वह भी बहुत सुविधापूर्ण है। क्योंकि जो तोड़ता है वह समझदार मालूम पड़ने लगता है। विचारक जान पड़ता है। विचारक होना इतना सस्ता नहीं है। बड़ा कठिन विषय है। वह चीज़ों को इतने गौर से खोजता है कि खुद ही मुश्किल में पड़ जाता है। तय करना कठिन होता है कि उसे क्या कहें।

मैं कहता हूं ज़रूर अंधविश्वास तोड़ना चाहिए। लेकिन पहली चीज़ जो तोड़नी है, वह है अविचार। बिना विचारे कुछ करने की प्रवृत्ति पहली चीज़ है जिसे तोड़ना है। विचार करने की प्रवृत्ति पैदा करनी है और बिना विचार किए मान लेने की प्रवृत्ति तोड़ देनी है।

सभी धर्म अंधविश्वास की बेड़ियां तोड़ने का प्रयत्न करते हैं और हरेक धर्म, नई जंजीर बना देता है। उसमें कुछ फर्क नहीं आता। इतने धर्म दुनिया में आए। सुधारक की भांति वे कहते हैं, हम सब अंधविश्वास खत्म करना चाहते हैं। सारे अंधविश्वास मिटाने में यही होता है कि कुछ मिटता नहीं है। हां जो पुराने अंधविश्वास से ऊब गए होते हैं बदल जाते हैं। वे नया अंधविश्वास पकड़ लेते हैं और प्रसन्न होते हैं कि हम बदल गए हैं।

असल में प्रत्येक आदमी के भीतर इतनी चेतना जागृत करने का प्रश्न है ताकि स्वतंत्र होने की, विचारवान होने की, चेतनावान होने की आकांक्षा उसमें पैदा हो जाए। अनुयायी होने की, पीछे चलने की, अंधे होने की प्रवृत्ति कम हो जाए। तो दुनिया में अंधविश्वास टूटेंगे।

अंधविश्वास कोई ऐसी सुनिश्चित चीज नहीं है कि आपने पक्का कर लिया कि यह रहा अंधविश्वास।

असल में एक ही चीज़ किसी स्थिति में अंधविश्वास हो सकती है और किसी स्थिति में नहीं। हजारों चीज़ें वैज्ञानिक रूप से हम मानते हैं कि ठीक हैं वे अंधविश्वास ही होती हैं। इस युग में धार्मिक अंधविश्वास कम होते जा रहे हैं और वैज्ञानिक अंधविश्वास बढ़ते जा रहे हैं। जिसे हम बिना जाने मान लेते हैं और बिना जाने अस्वीकार कर देते हैं वह अंधविश्वास ही है। अगर बिना किसी बात की खोजबीन किए ही उसे अंधविश्वास मान लिया है तो यह अंधविश्वास से भी बड़ा अंधविश्वास है।

□ महेश प्रसाद जोशी
कपुर्दा, छिंदवाड़ा

प्रिय दोस्तो,

*तुम लोगों की पत्रिका चकमक देखी तो अपना मन भी तुम्हारे जैसे खिलौने बनाने को करने लगा। फिर हमने तुम्हारे अरविंद चाचा को खोजा जो कि तुम लोगों को **खेल खेल में** न जाने क्या-क्या सिखा देते हैं। फिर उनसे कहा कि किसी भी तरह चार दिन के लिए यहां चले आओ, हम और हमारे जैसे बड़े लोग भी बच्चों की तरह कुछ सीखना चाहते हैं और जानते हो 11 जून, 87 को अरविंद **चाचा** हमारे गांव आ गए।*

हमने अपने आस पास के दूर-दराज के जितने मित्र थे सबको उनके आने की सूचना दे रखी थी। हम सब जो लगभग 30 थे उनसे खूब सारी चीजें सीखीं, जैसे दियासलाई की तीली के खिलौने डिब्बी के खिलौने, पेपर फोल्डिंग और चीन वाली पहेली भी सीखी। अरे वही पहेली जिसका नाम देन ग्राम है। बहुत मजा आता है। है न! और रबड़ सोल से कार, सेल से इंजन बनाया। रंगीन पन्नियों से रंगों का मेला बनाया और जो पहेलियां अरविंद चाचा ने सिखाईं, वह सब बनाईं और सीखी।

*जानते हो हम सीखने वालों में से बीस तो अध्यापक हैं। अब हम सभी की योजना है कि तुम जैसे बहुत सारे मित्रों को, जिनको कभी चकमक या दूसरी बाल-पत्रिका नहीं मिल पाती उनको बहुत सारी चीजें सिखानी हैं। **विज्ञान खेल खेल में** भी सिखाना है।*

तुम सब लोगों ने अपनी गर्मी की छुट्टी में क्या-क्या बनाया, क्या किया? लिखना हमारा पता साथ में है।

प्यार सहित, तुम्हारी दीदी
शोभना
विज्ञान बाल विद्यालय
तेहरीमाफी (तिंदवारी) बांदा (उ.प्र.)

मैं अपनी सहेली के घर बैठी थी कि सामने अलमारी पर मेरी निगाह पड़ी, वहां कई पत्रिकाएं रखीं थीं। उनमें चकमक भी थी। इसके पहले मैंने सिर्फ इसका नाम सुना था, चर्चा सुनी थी। जैसा नाम, वैसा गुण है।

□ राजलक्ष्मी श्रीवास्तव, इंदौर

चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

1. मुग्धा शर्मा 'अर्चना', 12 वर्ष
2. पत्र लिखकर दूर दराज के मित्रों को हंसाना, कविता, कहानी लिखना, मित्रों की फोटो एकत्रित करना
3. द्वारा सतीश उपाध्याय, श्री गांधी आश्रम, खादी नगर, मनेन्द्रगढ़, (सरगुजा)

1. रोहिताश्व त्रिपाठी, 16 वर्ष
2. घूमना पत्र-मित्रता
3. चांगोरा भाटा, महादेव घाट रोड़, रायपुर

1. अपर्णा श्रीवास्तव
2. रागोंली बनाना, चित्रकला पत्रिकाएं पढ़ना
3. द्वारा श्रीमती उषा श्रीवास्तव, एक्साइज इंस्पेक्टर शासकीय आवासगृह, अमरवाड़ा, छिंदवाड़ा

1. दिनेश चौहान, सातवीं
2. क्रिकेट खेलना, घूमना, सिनेमा देखना, गीत गाना, पत्रिका खोजना
3. सिगनसरा, सक्ती, बिलासपुर

1. अकबर खान कुरैशी, दसवीं
2. कविता लिखना, पुस्तक पढ़ना
3. विद्या मंदिर, परसदा, अभनपुर, रायपुर

1. यादवेन्द्र सिंह बघेल, पांचवीं
2. चकमक पढ़ना, विज्ञान खेल खेलना,
3. द्वारा आर. पी. सिंह, शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय, गेरसा (सरगुजा)

1. झावेन्द्र कुमार ध्रुव
2. आकाशवाणी व पत्र-पत्रिका में भाग लेना
3. पहन्दा, महामाई चौक, बालौदा बाजार, रायपुर

1. श्रीकांत चाटे, 11 वर्ष
2. कमेंट्री सुनना, चित्र बनाना
3. नेहरु वार्ड, चांदामेटा, छिंदवाड़ा

1. आशुतोष व्यास, 13 वर्ष
2. अखबार पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. पुरानी बस्ती, कस्तूरबा वार्ड, पिपरिया

1. मुकेश सिंह रघुवंशी
2. पढ़ना, फिल्म देखना
3. मगराना, गुना

1. अखिलेश पाठक, 13 वर्ष
2. फुटबाल खेलना, चित्रकारी करना
3. नूतन शा. उ. मा .वि. 3, जयसिंह मार्ग, उज्जैन

1. भोगेन्द्र पटेल, 14 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, घूमना
3. शा. पू. मा. शाला, सोंठी, बिलासपुर

1. देवेन्द्र पटेल, 16 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3. दसवीं, सोंठी, चांपा, बिलासपुर

1. अब्दुल परवेज़ खान, 15 वर्ष
2. कहानी लिखना, पत्र लिखना
3. शा. उ. मा. शाला, पंधाना, खंडवा

1. अजय कुमार तिवारी, 14 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पुस्तक पढ़ना
3. पीपल्या बुजुर्ग, खरगोन

1. कल्पना तिवारी, 12 वर्ष
2. पढ़ना एवं गृह कार्य करना
3. पीपल्या बुजुर्ग, खरगोन

1. रामशरण पटेल, दसवीं
2. वृक्षारोपण, पुस्तक पढ़ना
3. सोंठी (चांपा), बिलासपुर

1. इनायत खान, टायरवाला, 18 वर्ष
2. पत्र मित्रता, खूब हंसना
3. सुभाष मार्ग, कुक्षी, धार

1. रेहाना बी, 16 वर्ष
2. चित्र बनाना, गीत गाना, दोस्ती करना,
3. सुभाष मार्ग, कुक्षी, धार

1. दीपेन्द्र कुमार गुप्ता, 12 वर्ष
2. चकमक के प्रयोग करना, विज्ञान की किताब पढ़ना
3. द्वारा होरीलाल गुप्ता, मनेन्द्रगढ़, सरगुजा

1. विकास सरमंडल
2. क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना
3. शा. मा. शाला, बलवाड़ा, खरगोन

1. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय
2. प्रयोग करना, प्रतियोगिता में भाग लेना, वैज्ञानिक संग्रह
3. ब्लाक कालोनी, धरसीवां, रायपुर

1. राकेश सोनी, छटवीं
2. चकमक पढ़ना, फिल्में देखना
3. बी. एल. सोनी, मध्य प्रदेश विद्युत मंडल तिल्दा, रायपुर

1. रामभजन सोनी, नवमीं
2. चकमक पढ़ना, गाना-गाना
3. सोनारपारा, आरंग, महानदी, रायपुर

1. विकास सोनी, 16 वर्ष
2. चकमक पढ़ना
3. किलावार्ड, पचरीघाट, बिलासपुर

1. अब्दुला, 13 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, टेबिल टेनिस
3. रतलाम

1. चंद्रकांत मनोहर लाल गुप्ता, छटवीं
2. क्रिकेट खेलना
3. बैड़िया, खरगोन 451 113

1. मनोज कुमार जैन
2. चकमक पढ़ना, पत्र मित्रता करना
3. अमायन, भिण्ड

1. जितेन्द्र मोहन चौधरी, 14 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना, घूमना
3. कुड़ाना, सांवेर, इन्दौर

अरशद खान, 11 वर्ष, कांकेर

कागज के एक हजार पक्षी

चित्र: फरहान मुजीब

बात 1945 की है जब जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी के अपने ही भाई-बंधुओं पर मानवजाति ने पहला एटम बम गिराया। पांच लाख की आबादी वाला शहर हिरोशिमा तहस-नहस हो गया। बम गिराए जाने की इस घटना के एक सप्ताह बाद ही हिरोशिमा में एक विचित्र प्रकार की बीमारी फैल गई। स्वस्थ दिखाई देते लोग अचानक बीमार और कमजोर हो जाते और कुछ ही समय बाद मर जाते थे। यह सब इतना अजीब था कि लोगों को समझ ही नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है? यहां तक कि इस बीमारी को बड़े-बड़े डाक्टर भी समझ नहीं पाए। आज इस घटना को गुजरे चालीस साल से अधिक हो चुके हैं किंतु आज भी यह किसी की समझ में ठीक-ठीक नहीं आया है कि एटम-बम से उत्पन्न विकिरण का असर मानव शरीर पर कैसे पड़ता है?

इसी हिरोशिमा शहर में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था सदाको सासाकी। जब शहर पर एटमबम गिराया गया तब उसकी उम्र लगभग दो साल की रही होगी। सदाको उस स्थान से ढ़ाई कि.मी. दूर रहती थी जहां पर बम गिरा। अन्य लोगों की तरह उसके शरीर पर चोट या जलने के निशान नहीं थे। धीरे-धीरे सदाको बड़ी होती गई। अब वह बारह साल की खुशमिज़ाज और हंसती-खेलती लड़की थी और सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसे दौड़ने का बहुत शौक था। अपने स्कूल की दौड़ प्रतियोगिता में वह हमेशा प्रथम आती थी। एक दिन ऐसी ही एक प्रतियोगिता के बाद वह अपने आपको बहुत थका-थका महसूस करने लगी। उसे चक्कर भी आने लगे। कुछ देर बाद वह ठीक हो गई। उसने सोचा कि यह दौड़ की थकान के कारण ही हुआ होगा। लेकिन कुछ दिनों बाद उसे हर कभी चक्कर आने लगे। जब भी वह दौड़ लगाती या कोई मेहनत का काम करती तो उसका सिर घूमने लगता। लेकिन सदाको ने यह बात

किसी से नहीं कही। अपनी सबसे प्रिय सहेली चिज़ूको से भी नहीं।

एक दिन सदाको को इतनी जोर से चक्कर आया कि वह अपने को संभाल न पाई, गिर पड़ी और बहुत देर तक जमीन से उठ न सकी। अब यह बात सबकी नजर में आई और उसे डाक्टर के पास ले जाया गया। जांच से जो पता चला उस पर किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। सदाको को ल्युकीमिया की बीमारी थी,जो एक प्रकार का कैंसर है- खून का। यह बीमारी केवल सदाको को ही नहीं थी, उसकी उम्र के कई बच्चों में यह रोग पाया गया। लोगों ने इस बीमारी को 'एटम बम रोग' का नाम दे दिया क्योंकि यह कैंसर एटम बम के कारण ही हुआ था। ल्युकीमिया के लगभग सभी रोगी मर रहे थे। सदाको इस बीमारी के कारण बहुत डर गई थी, वह मरना नहीं चाहती थी। उसे अस्पताल में भर्ती कर दिया गया।

कुछ दिन बाद सदाको की सहेली चिज़ूको उससे मिलने अस्पताल आई। वह एक खास किस्म का कागज साथ लाई थी और उसने इस कागज से एक पक्षी बनाया जिसे 'क्रेन' कहते हैं। उसने सदाको को क्रेन पक्षी की लोककथा भी सुनाई। कथा के अनुसार क्रेन जापान का एक प्रमुख पक्षी है। इसकी आयु एक हजार साल की है। अगर कोई बीमार व्यक्ति कागज के एक हजार 'क्रेन' बनाए तो वह ठीक हो जाता है। चिज़ूको से यह बात सुनकर सदाको ने तय किया कि वह भी कागज के एक हजार 'क्रेन' बनाएगी। हालांकि बीमारी के कारण वह बहुत कमजोर हो गई थी और बहुत देर तक काम नहीं कर सकती थी। लेकिन सदाको एक हिम्मत वाली लड़की थी। बीमारी के बावजूद उसने 'क्रेन' बनाने का काम शुरू कर दिया।

सदाको 1000 'क्रेन' बना चुकी थी, पर उसके स्वास्थ्य में कोई खास सुधार नहीं हुआ। सदाको ने फिर भी हिम्मत नहीं हारी और 'क्रेन' बनाती रही। उसकी हिम्मत और धीरज से सभी लोग बहुत प्रभावित हुए। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे सदाको की तबियत और बिगड़ने लगी। आखिरकार 25 अक्टूबर, 1955 को उसकी मृत्यु हो गई।

लेकिन यह कहानी सदाको की मौत से खत्म नहीं होती है। सदाको के बहुत से मित्र थे जो उसे बहुत प्यार करते थे। सभी उसकी मौत से बहुत दुखी थे। हिरोशिमा में कई बच्चे ऐसे ही 'एटम बम रोग' से मरते जा रहे थे। सदाको के मित्रों की इच्छा थी कि वे उसकी याद में कुछ करें।

आखिर उसके 39 मित्रों ने एक क्लब बनाया और उसकी याद में एक स्मारक बनाने के लिए चंदा इकट्ठा करना शुरू किया। यह बात तेजी से दूर-दूर तक फैल गई। जापान के 3100 स्कूलों तथा नौ अन्य देशों के छात्रों ने इस क्लब को चंदा दिया। 5 मई, 1958 को, यानि सदाको की मृत्यु के तीन साल बाद उनके पास इतना पैसा

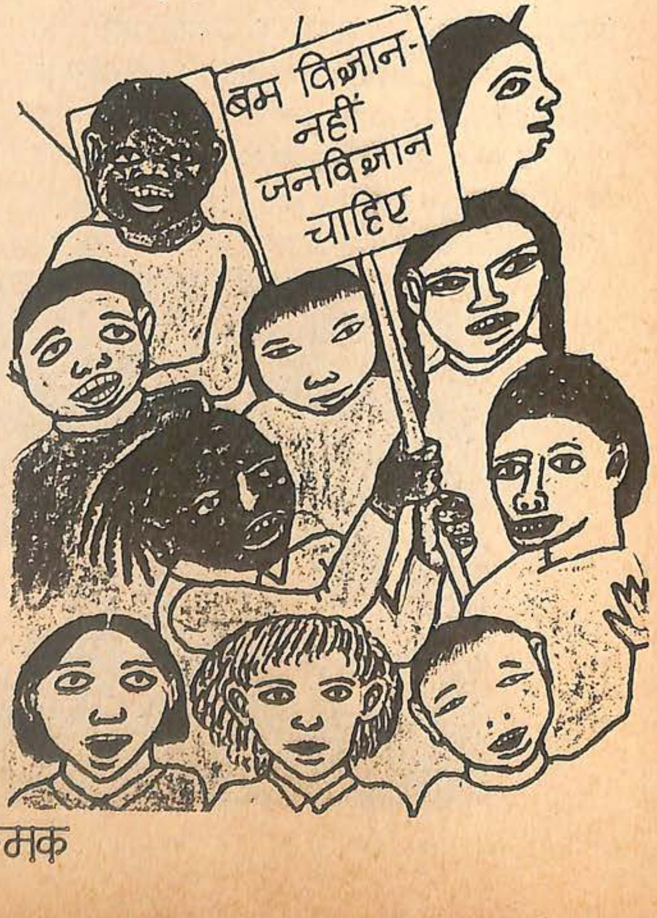

गिरती बर्फ में नाचता जापानी क्रेन पक्षी

इकट्ठा हो गया कि एक स्मारक का निर्माण किया जा सके। बच्चों ने इस स्मारक को नाम दिया - 'बच्चों का शांति स्मारक'।

हिरोशिमा शहर के मध्य में बने शांतिपार्क में यह स्मारक स्थित है। यह ठीक वही जगह है जहां 6 अगस्त 1945 को एटमबम गिराया गया था। इस स्मारक को बनाने का प्रयास इतना प्रसिद्ध हो गया कि इस घटना पर 'एक हजार कागज के क्रेन' नाम से एक फिल्म बनाई गई। इस फिल्म को बनाने में हिरोशिमा के 60 और टोकियो के 20 बच्चों ने सहायता की। फिल्म निर्माण के बाद इन बच्चों ने तय किया कि अब वे एक साथ ही रहेंगे। इसके लिये उन्होंने, 'कागज क्रेन क्लब' की स्थापना की। इस क्लब का उद्देश्य था कि बच्चे मिलकर सोचें और शांति के लिए काम करें। यह क्लब अब भी है। क्लब के सदस्य 'बच्चों के शांति स्मारक' की देखभाल करते हैं। एटमबम की चपेट से बचे लोग उनसे मिलते रहते हैं और बीमार व जरूरतमंद लोगों की सहायता करते हैं।

इसके अलावा इस क्लब के सदस्य कागज के 'क्रेन' भी बनाते हैं और उसका विभिन्न रूप में इस्तेमाल करते हैं। वे इन्हें बच्चों के शांति स्मारक और शांति पार्क में बने अन्य स्मारकों में लटकाते हैं।

'कागज के क्रेन' बनाकर वे दूसरे देशों के नेताओं और महत्वपूर्ण व्यक्तियों को भी भेजते हैं यह याद दिलाते हुए कि दुनिया के बच्चे चाहते हैं कि संसार से एटमबम हटाए जाएं।

जब कभी एटमबम से बचे हुए लोग या ऐसे लोग जो विश्वशांति के लिए काम कर रहे हैं, हिरोशिमा आते हैं तो 'कागज क्रेन क्लब' के सदस्य उनका स्वागत करते हैं। कागज के क्रेनों की माला पहनाते हैं और हिरोशिमा जिस बात का प्रतीक है उसे समझने में मदद करते हैं।

कागज के क्रेन बनाने और कागज क्रेन क्लब की स्थापना का उद्देश्य 'बच्चों के शांति स्मारक' के पत्थरों पर इस तरह से लिखा हुआ है-

यह है हमारी पुकार
यह है हमारी प्रार्थना
इस विश्व में शांति स्थापित करना!

माथापच्ची

(1)

चार दोस्त एक तालाब के किनारे आपस में मजाक कर रहे थे। एक ने कहा, अगर मैं ठान लूं तो इस तालाब में एक भी बूंद पानी नहीं रहने दूं।

दूसरा कहने लगा, मेरे हाथ में जो गुब्बारा है मैं उस पर रुमाल बिछाकर उस पर खड़ा हो सकता हूं।

तीसरे ने कहा, मैं हाथ भर की पेटी में आठ हाथ की मूर्ति रख सकता हूं।

चौथा कहने लगा, में अगर चाहूं तो सबको हंसता हुआ चांद दिखा सकता हूं।

सभी ने अपना-अपना कहा सच करके दिखाया। बताओ यह कैसे संभव है।

(2)

''चार फब्बारे, एक तालाब
एक भरने में लगाता एक दिन-रात,
दूसरा लगाता दो दिन और दो रात।
तीसरे का तिगुना पहले से मंद आब,
चौथा लगाता चार दिन, चार रात
बता मुझे कब भरेगा तालाब
गर सब खुल जाएं एक साथ?''

(3)

एक व्यक्ति ने नौ घोड़े और सात गधे 1,50,000 रुपए में बेच डाले। हर एक घोड़े के लिए उसे गधे से दुगना पैसा मिला। बताओ घोड़े व गधे उसने किस दाम से बेचे?

(4)

एक ठेकेदार ने 50 किलोमीटर लंबी रेल लाइन बिछाने का ठेका लिया। इस के लिए उसने 225 लोगों को काम पर लगाया। सात महीने बाद केवल 21 किलोमीटर लंबी लाइन ही बिछी थी। अगर काम एक साल में पूरा करना है तो कितने और लोगों की जरूरत होगी?

(5)

दुबे जी कुछ लोगों के साथ एक होटल में खाना खाने पहुंचे। होटल वाले ने पूछा, 'कितने लोगों की थाली लगेगी?' दुबेजी बोले, 'भई, हम में माता, पिता, बहन, भाई, भांजा, भांजी, अंकल, आंटी और दो कज़न (ममेरे, चचेरे, मौसेरे या फुफेरे भाई बहन) शामिल हैं। हरेक के लिए एक थाली लगेगी।

बताओ इन रिश्तों के लिए कम से कम कितने व्यक्ति होने चाहिए?

(6)

साबिर एक नदी किनारे यात्रा पर निकला। उसने रविवार की सुबह यात्रा शुरू की और अगले सोमवार की शाम को समाप्त। कुल मिलाकर वह 117 किलोमीटर चला। हर अगले दिन वह पिछले दिन से एक किलोमीटर अधिक चला। बताओ आखिर किस दिन कितने किलोमीटर चला?

(7)

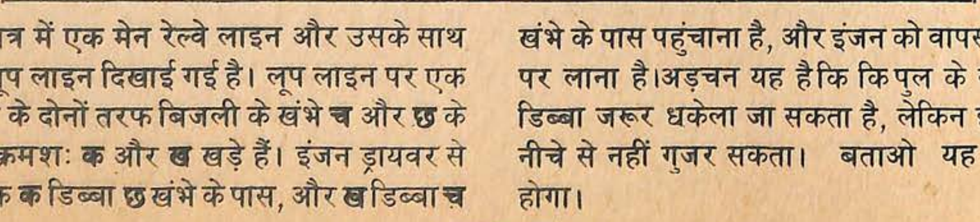

यहां दिए चित्र में एक मेन रेल्वे लाइन और उसके साथ एक छोटी लूप लाइन दिखाई गई है। लूप लाइन पर एक पुल है। पुल के दोनों तरफ बिजली के खंभे **च** और **छ** के पास डिब्बे क्रमशः **क** और **ख** खड़े हैं। इंजन ड्रायवर से कहा गया कि **क** डिब्बा **छ** खंभे के पास, और **ख** डिब्बा **च** खंभे के पास पहुंचाना है, और इंजन को वापस मेन लाइन पर लाना है।अड़चन यह है कि कि पुल के नीचे से एक डिब्बा जरूर धकेला जा सकता है, लेकिन इंजन उसके नीचे से नहीं गुजर सकता। बताओ यह कैसे संभव होगा।

(8)

एक व्यक्ति को डाकू पकड़ कर ले गए। डाकुओं ने उससे कहा, 'कोई एक कथन दो। अगर कथन सही है तो फांसी लगेगी और गलत है तो गोली से उड़ा दिए जाओगे। व्यक्ति क्या कथन दे कि उस की जान बच जाए।

(9)

एक ट्रक का नंबर 1 और 500 की संख्या के बीच है। संख्या ऐसी है कि वह किसी संख्या का वर्ग है और अगर से उलटा लटका दें तो जो संख्या बनेगी, वह भी किसी और संख्या का वर्ग है। बताओ ट्रक का नंबर क्या है?

(10)

एक व्यक्ति पेड़ पर बैठे पक्षियों से नमस्कार करता है। तो वे कहते हैं कि हमसे क्या नमस्कार करते हो, अभी तो हमसे दुगने जंगल गए हैं। उनसे दुगने शहर गए हैं, और दो पानी पीने गए हैं। कुल मिलाकर सब 100 पक्षी हैं। तो बताओ पेड़ पर कितने पक्षी हैं?

□ मुकेश रघुवंशी मगरांना, गुना

उत्तर : जून अंक के

चकमक, शब्द पहेली जून, 87 में ढेर सारे पाठकों ने हिस्सा लिया। सही हल यहां प्रकाशित किया गया है। **सही हल भेजने वाले** हैं: गुरुकुल माध्यमिक विद्यालय, गायत्री आश्रम, अभयपुर, जिला शाजापुर, कक्षा आठ के छात्र नरेन्द्र चावड़ा और उनके ढेर सारे साथी। संध्या जोशी, कपुर्दा (छिंदवाड़ा)। आर.के. पुरी और संदीप पुरी, महेन्द्र गढ़ (सरगुजा), अवेस अली सैयद, छठवीं, भीकनगांव, खरगोन।, राजेन्द्र मालवीय, बलड़ी रोड, हरसूद।

1 ज	हा	2 न		3 ल	ह	सी			4 भा
न		5 दी	म	क			6 प	हा	ड़
प				ड़ी			र्या		
7 द	मा		8 गै			9 सा	व	न	
		10 बां	स				र		11 शा
		ध		12 प्र	दू	ष	ण		ह
13 अ	णु			का				14 खा	द
च		15 आ	का	श	गं	16 गा			
17 क	द	म				18 ज	न्म	19 भू	20 मि
न			21 अ	ज	ग	र		ख	क

1. 180 मीटर

6. यदि छेद B की चौड़ाई बहुत कम है तो पानी बिलकुल नहीं निकलेगा। अन्यथा छेद की चौड़ाई जितने ऊंचे जल स्तंभ के दबाव से पानी की पतली धार फूट पड़ेगी।

उत्तर : जुलाई अंक के

1. कुल महिलाओं की संख्या भी सात ही होगी, नौ नहीं जैसा कि हम सोचते हैं। एक महिला की दो लड़कियां हैं। उन दो लड़कियों की दो-दो लड़कियां हैं।

2. ग्यारह टुकड़े

3. लकड़ियों से चूल्हे इस तरह बनाए गए थे–

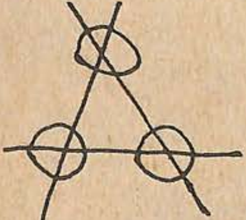

4. आठ

6. 9-8-7 + 6 + 5 - 4 + 3 - 2 - 1 = 1

7. इस गति से चोर नदी कभी पार नहीं कर पाएगा।

8. 6 संतरे

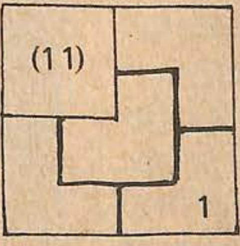

9. उतना ही बड़ा

10. केतली में टोंटी की ऊंचाई से अधिक पानी नहीं भरा जा सकता; पानी बाहर गिरने लगा। चूंकि दोनों केतलियों में टोटियों के छेद समान ऊंचाई पर स्थित हैं, इसलिए बड़ी केतली में भी उतना ही पानी आएगा, जितना छोटी में।

5.

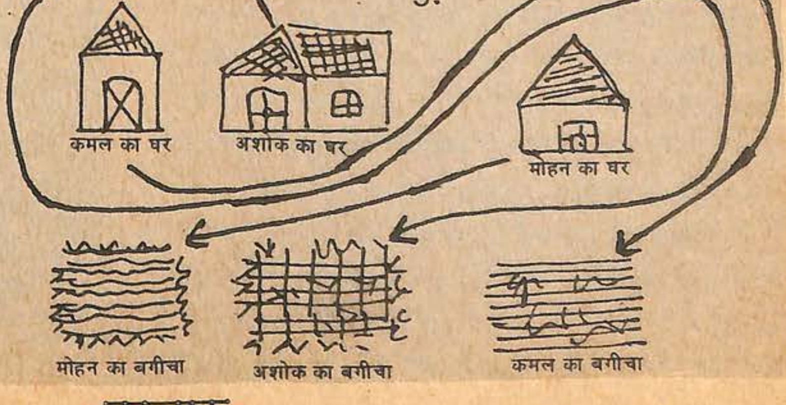

स्टारवार

मानव जाति को नष्ट करने का वैज्ञानिक प्रयास

6 अगस्त, 19 4 5 को जो परमाणु बम अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा नगर पर गिराया था वह एक हवाई जहाज़ से छोड़ा गया था। आजकल के बमों और बम गिराने के तरीकों की तुलना में यह घटना बचकाना लगती है।

आज इस बम से कई हज़ार गुना शक्तिशाली बम इस पृथ्वी पर अलग-अलग जगह तैनात हैं। और केवल एक, दो या तीन नहीं कई हज़ार हैं। ये बम हवाई जहाज़ से नहीं गिराए जाएंगे, बल्कि इनको राकेटों से अपने निशाने पर भेजा जाएगा। इस बम सहित राकेट को मिसाइल का नाम दिया गया है। ये मिसाइल केवल ज़मीन पर ही तैनात नहीं हैं, समुद्रों में पनडुब्बियों से भी ऐसे मिसाइल छोड़ने की व्यवस्था की गई है।

अंतरिक्ष का उपयोग अभी तक उपग्रहों द्वारा टेलीफोन व टेलीविजन तरंगों को पृथ्वी के कोने-कोने में भेजने के लिए ही हो रहा था। कुछ देश जरूर कुछ उपग्रहों का उपयोग एक दूसरे दूसरे की जासूसी करने के लिए कर रहे हैं। लेकिन अब अमेरिका ने अंतरिक्ष का उपयोग करने की जो योजना बनाई है, उसका अंजाम निश्चित एक ही है- पृथ्वी को नष्ट करना। इस पागलपन की कहानी भोपाल के एक छात्र कबीर वाजपेयी ने लिखी है, तुम भी पढ़ो।

संपूर्ण ब्रम्हांड अनेक रहस्यों से भरा हुआ है। हम पृथ्वी पर कैसे आए? सौर मंडल कैसे बना? संसार की शुरुआत कब और कैसे हुई? ये कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न आज भी रहस्य बने हुए हैं। इनको सुलझाने की कोशिश मनुष्य ने निरंतर की है— और अब वह इनके उत्तर स्वंय अंतरिक्ष में जाकर खोजने की कोशिश कर रहा है।

मनुष्य अंतरिक्ष में घूम आया है, घर की तरह रह आया है, कई तरह के प्रयोग कर आया है। लेकिन अब उसने वहां एक नया और एकदम अनूठा प्रयोग करने की ठानी है। यह प्रयोग वहां एक भयानक आत्मघाती युद्ध शुरू करने का है। धरती पर युद्ध कर-कर के जब वह ऊब गया तो उसने सोचा कि यह प्रयोग अपने आप में एकदम नया तो है ही, साथ ही संसार भर में तहलका मचाने और भय व्याप्त करने के लिए काफी है।

यही वह प्रयोग है जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका आसमान के ऊपर अंतरिक्ष में कर डालने को अड़ा हुआ है। इसका सरकारी नाम एस.डी.आई. (स्ट्रेटिजिक डिफेन्स इनीशिएटिव) है। पर इसे 'स्टार वार' या 'सितारों पर युद्ध' के नाम से आमतौर पर जाना जाता है।

इसकी घोषणा 23 मार्च 1983 को अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने की थी। इस परियोजना की घोषणा के कुछ ही समय बाद याने 6 जनवरी 1984 को एक विशेष प्रावधान के तहत यह भी तय कर दिया गया कि इस शताब्दी के अंत तक अंतरिक्ष में युद्ध संबंधी सैनिक गतिविधियों को बढ़ाना ही अमेरिका का सबसे प्रमुख उद्देश्य होगा।

आखिर यह 'स्टार वार' बला है क्या? अंतरिक्ष में आखिर युद्ध कैसे होगा? इस युद्ध में कैसे अस्त्र इस्तेमाल किए जाएंगे? इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

परियोजना की रूपरेखा और इसके कार्यक्रम को बनाने वालों का कहना है कि इसका मुख्य उद्देश्य

समुद्री जहाज़ से छोड़ी गई मिसाइल

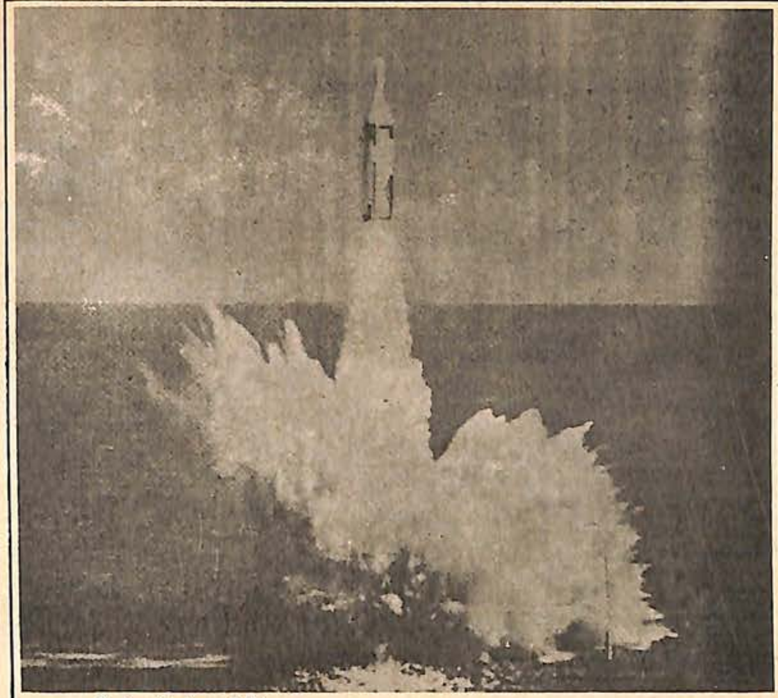

पनडुब्बी से छोड़ी गई मिसाइल

मूलत: एक मिसाइल विरोधी अंतरिक्ष कवच तैयार करना और उसे अंतरिक्ष में लगाना है। इस कवच का उपयोग दुश्मन के अड्डों से चली घातक मिसाइलों को अपने निशाने पर पहुंचने से पहले ही नष्ट करने के लिए किया जाएगा। इस काम के लिए अंतरिक्ष में कई अंतरिक्ष उपग्रह और अन्य यान हमेशा चक्कर काटते रहेंगे। ये उपग्रह तथा यान अत्यंत घातक किरणों का इस्तेमाल करने वाले अस्त्रों से लैस रहेंगे। इनमें विद्युत चुंबकीय बंदूक, कण उत्प्रेरक, लेजर तथा अन्य घातक किरणों को फेंकने वाले अस्त्र होंगे। इनसे निकलने वाली तेज घातक किरणें कुछ ही क्षणों में अपने निशाने को नष्ट कर देने में सक्षम होंगी।

इस कवच की तीन मिसाइल विरोधी परतें अंतरिक्ष, हवा तथा पृथ्वी में लगाई जाएंगी। इसमें सबसे प्रमुख कार्य अंतरिक्ष में लगे अस्त्रों का होगा। शत्रु की मिसाइलों को उनकी ऊपर उठने की प्रक्रिया में ही नष्ट कर दिया जाएगा, जब वे पृथ्वी से करीब 500 किलोमीटर की ऊंचाई पर होंगी। यह कार्य रासायनिक तथा एक्सरे-लेजर और कण उत्प्रेरक युक्त अस्त्रों की सहायता से होगा। अंतरिक्ष में सैकड़ों (जी हां सैकड़ों!!) प्लेटफार्म जैसे स्टेशन होंगे जिन पर जमीन से उठती शत्रु की मिसाइलों पर नजर रखने वाले यंत्र और ये घातक अस्त्र लगे होंगे।

इस कवच की दूसरी परत का कार्य बची हुई मिसाइलों को उनके मध्य मार्ग में नष्ट कर देना है। इस काम के लिए कई अंतरिक्ष उपग्रह लगे रहेंगे जो पृथ्वी की कक्षा के समीप ही होंगे। यहां विद्युत चुंबकीय बंदूकों का प्रयोग किया जाएगा, जिनके बारे में यह माना जाता है कि इनसे निकली गोलियों की गति कई किलोमीटर प्रति सेंकड होगी।

शत्रु की 100 में से केवल 9 या 10 मिसाइलें इन दोनों कवचों से बचकर निकल सकेंगी। इन बची हुई मिसाइलों को नष्ट करने का कार्य पृथ्वी पर लगा कवच करेगा। शत्रु की मिसाइलें जब अपने मार्ग के अंतिम चरण में होंगी (जो जमीन से 800 किलोमीटर से 9 किलोमीटर तक ऊंचा रहता है) तब उन्हें कम मारक क्षमता वाले जमीन पर लगे मिसाइल विरोधी अस्त्र नष्ट कर देंगे। इस कवच की दक्षता 97% होगी, यानी शत्रु की 100 मिसाइलों में से 97 मिसाइलों को यह कवच रोककर नष्ट कर देगा और केवल 3–4 मिसाइलों को ही अमेरिका की जमीन पर विस्फोट करने में सफलता मिलेगी। ऐसा योजनाकारों का कहना है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह पूरी प्रणाली अत्यंत जटिल, कठिन है और दुनिया के सबसे आधुनिक विज्ञान तथा तकनालाजी का इस्तेमाल करेगी। लेकिन इसे असल रूप देने के लिए और भी कई नई खोजों और

स्टारवॉर कार्यक्रम में मिसाइल विरोधी अस्त्रों की कार्य प्रणाली

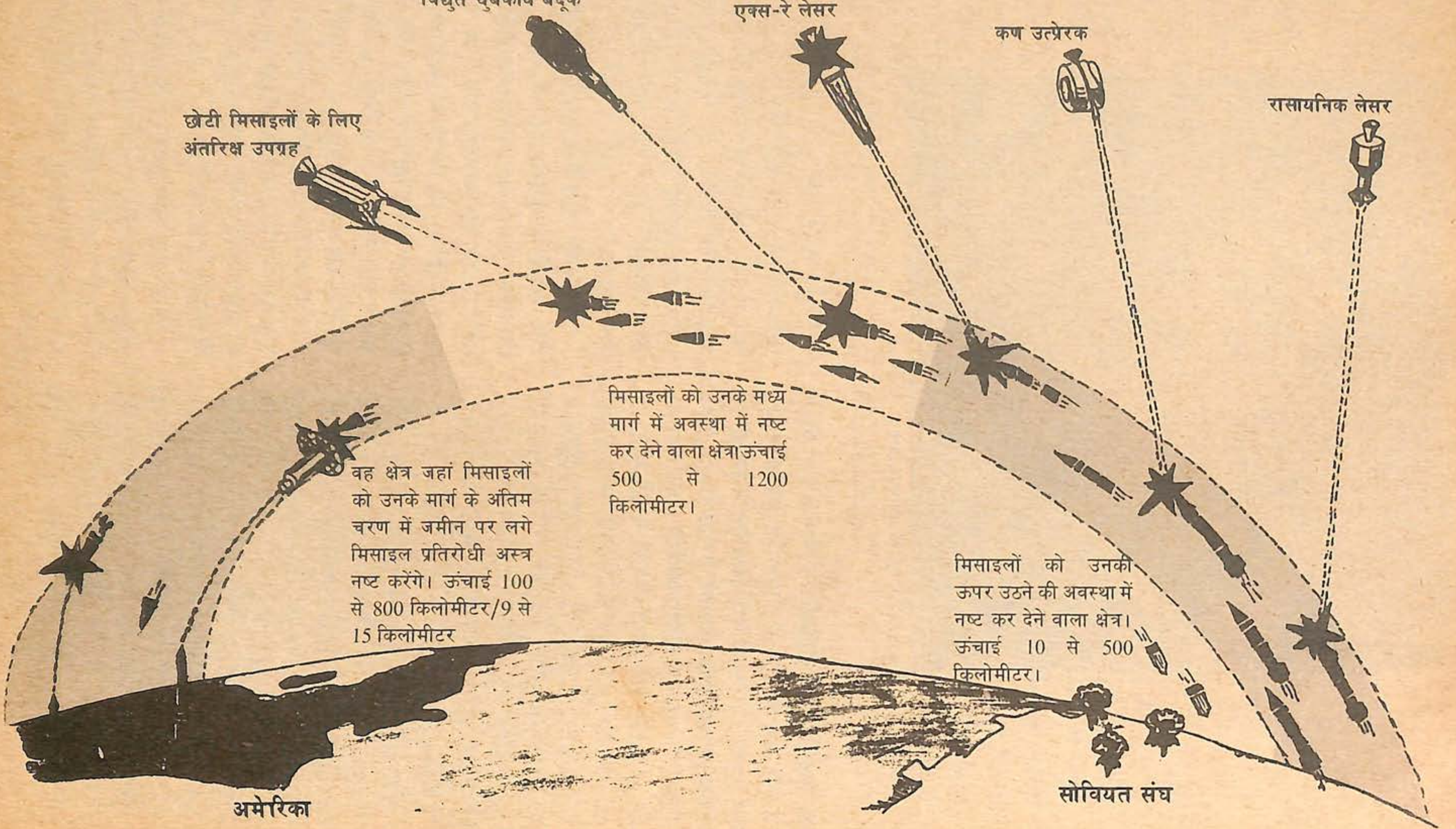

चित्र: कबीर वाजपेयी

ज़मीन से छोड़ी गई मिसाइल

आविष्कारों की जरूरत होगी। अन्यथा इसका कार्य करना संभव नहीं। तो क्या इस परियोजना की संपूर्ण प्रणाली कार्य कर सकेगी? क्या उसकी दक्षता 97% रह पाएगी? क्या सुपर कम्प्यूटर और दूसरे यंत्र शत्रु की हजारों मिसाइलों पर अलग-अलग नजर रख सकेंगे? यह अब एक विवाद का विषय बन चुका है।

परियोजना की रूप रेखा तैयार करने वालों का कहना है कि प्रणाली सचमुच कार्य कर सकेगी। लेकिन परियोजना पर काम कर रहे कई वैज्ञानिकों का कहना है कि यह प्रणाली अंसभव है। यह कभी पूरी तरह सक्षम रूप में कार्य नहीं कर सकेगी। पहली बात तो यही कि इस परियोजना के आधार, अंतरिक्ष में लगाए जाने वाले घातक किरण अस्त्रों का सिद्धांत एकदम नया है और इस दिशा में हुए प्रयोगों और परीक्षणों से निराशा ही हाथ लगी है।

इसके अलावा शत्रु की हज़ारों मिसाइलों के मार्ग पर हर क्षण अलग-अलग नजर रखना और उन पर वे घातक किरणें केन्द्रित कर फेंकना एक असंभव सी प्रक्रिया है, जो वर्तमान तकनीकी के बस के बाहर है। यह संपूर्ण प्रणाली कई सुपर कम्प्यूटरों की देख-रेख में कार्य करेगी। इसका मतलब है कि पृथ्वी का भविष्य जिन घातक हथियारों पर निर्भर करेगा वे मशीनों द्वारा नियन्त्रित होंगे। इन सुपर कम्प्यूटरों में जो प्रोग्राम डाला जाएगा वह भी सुपर कम्प्यूटर खुद ही तैयार करेंगे। इसी प्रोग्राम पर इस प्रणाली की दक्षता निर्भर करती है। यह कार्यक्रम तब तक दोष रहित नहीं होता (साधारण कम्प्यूटरों में भी) जब तक उसे असल में चला कर न देखा जाए, जो पहली बार युद्ध में ही संभव हो सकेगा। यही दोष उन घातक हथियारों की चूक का कारण बनेगा। जो हमें चारों ओर से घेरे होंगे। हर मशीन में बहुत नहीं तो थोड़ी गलती करने की आदत होती ही है। और इसी गलती से सारे पृथ्वी वासियों का जीवन खतरे में पड़ेगा। इस गलती से बचना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यह चूक कब होगी, कहां होगी, यह कोई नहीं जानता है।

परियोजना के आलोचकों का कहना है कि इसके कम्प्यूटर प्रोग्रामों में चूक करने की संभावना 80% तक हो सकती है। यानी इन हथियारों का हमला 100 में से 80 बार गलत जगह होगा। अगर यह सच है तो सर्वनाश निश्चित है।

दूसरी तरफ परियोजना बनाने वालों का यह कहना है कि इस मिसाइल विरोधी कवच से यदि सारी पृथ्वी को ढक दिया जाए तो पृथ्वी पर आणविक हथियारों की दौड़ जल्दी ही समाप्त हो जाएगी। लेकिन यह बात ठीक नहीं लगती। क्योंकि जब अमेरिका ऐसे अस्त्र बनाएगा तो सोवियत रूस भी इस दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश करेगा। फिर तो एक होड़ लग जाएगी (जो वास्तव में लग

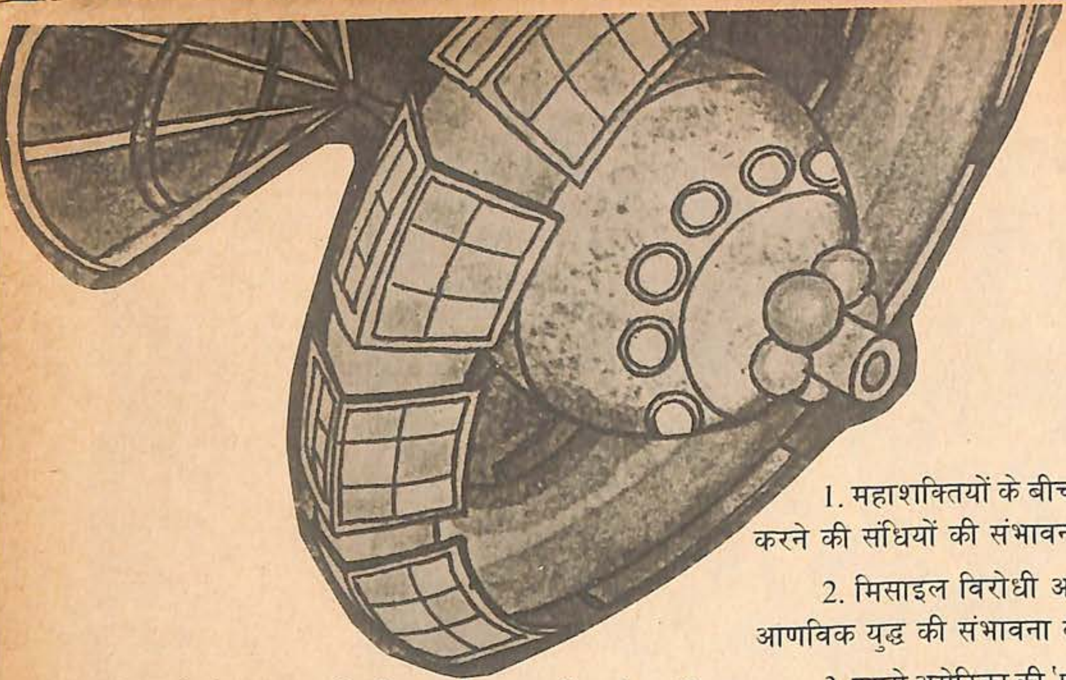

ही चुकी है) नष्ट करने की सनकी कला में आगे बढ़ने की—जिसे रोकना असंभव है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों के एक संगठन का कहना है कि इस प्रणाली पर कम से कम खर्चा पांच अरब अमेरिकी डालर (लगभग 75 खरब रुपए) होगा। यह एक बहुत बड़ी राशि है, जिसका समय के साथ बढ़ना स्वाभाविक है। क्या वास्तव में इतनी मंहगी सुरक्षा की जरूरत है? यह राशि तीसरी दुनिया (भारत जैसे देशों की दुनिया) के तमाम देशों में विज्ञान और तकनीकी पर हो रहे खर्चे का दो सौ पचास गुना है।

इस प्रणाली के विकसित होने से क्या परिणाम निकलेंगे ? तरह-तरह की अटकलें और निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं। मोटे रूप से निम्नलिखित प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं—

1. महाशक्तियों के बीच आणविक शस्त्रों को कम करने की संधियों की संभावना पर प्रभाव पड़ेगा।

2. मिसाइल विरोधी अस्त्रों के लगने से पहले ही आणविक युद्ध की संभावना बढ़ेगी।

3. इससे अमेरिका की 'पहले वार करने की क्षमता' को सहारा मिलेगा।

4. इन अस्त्रों का उपयोग न केवल सुरक्षात्मक अस्त्र के रूप में होगा जैसा कि इसके प्रचारकों का कहना है, बल्कि ये आक्रमण के लिए भी उपयोग में लाए जा सकते हैं। इनका उपयोग शत्रु के जमीन पर स्थित अड्डों तथा अंतरिक्ष उपग्रहों और यानों को नष्ट करने में भी किया जा सकता है। जिसके कारण ये ढाल के अलावा तलवार का काम भी कर सकेंगे।

5. विज्ञान और तकनीकी का सारा ध्यान और स्त्रोत, नष्ट करने की कला को विकसित करने में ही जाएगा। यह निश्चित ही मनुष्य और इस पृथ्वी के लिए घातक है।

इस कार्यक्रम को रोकना और इसका विरोध करना एक साहसिक और बुद्धिमता पूर्ण कदम होगा। अन्यथा आदमी अंतरिक्ष के सदियों पुराने रहस्यों को सुलझाने में कभी सफल नहीं हो पाएगा। ●

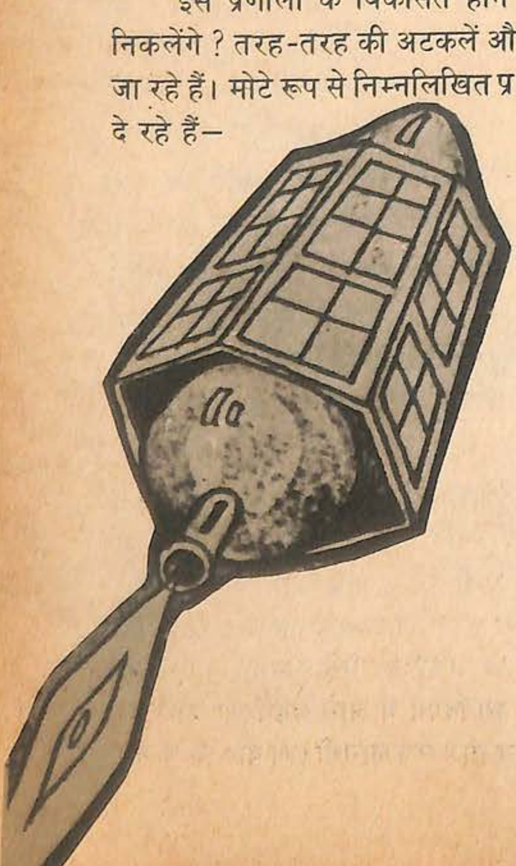

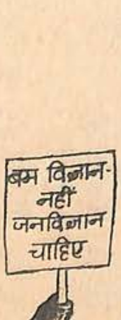

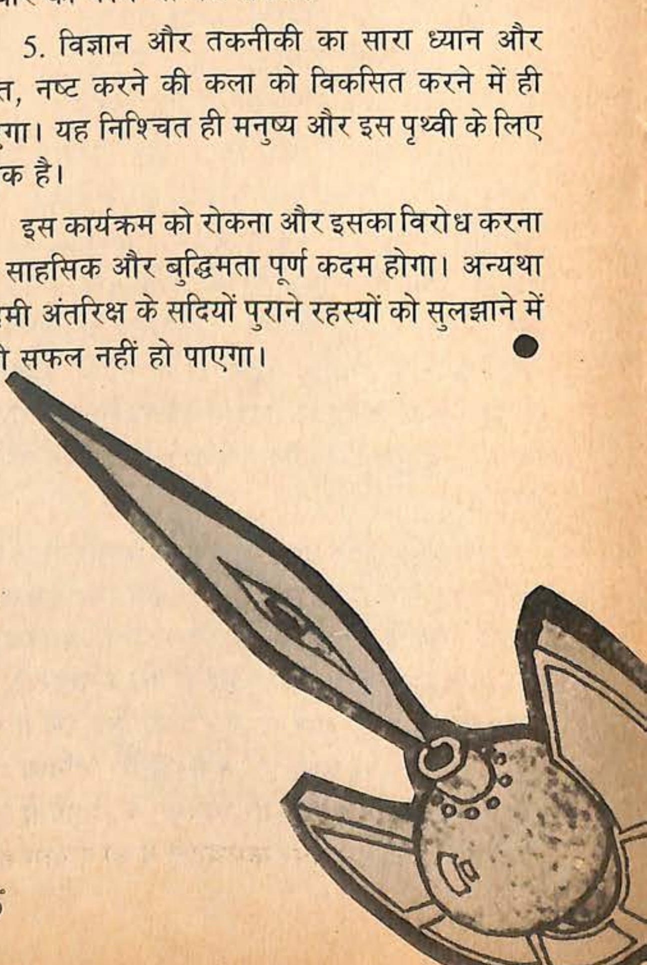

मुस्कान बम

पिता ने पूछा,
कल से इम्तहान है, तुम तैयार हो ना!
कहा बेटी ने,
हां पापा!
कौन-सा परचा है बेटी?
विज्ञान का!
जानती हो, क्या पूछा जाएगा?
क्या पूछा जाएगा, पापा!
पूछेंगे एक ही बात
न्यूटन्स लॉ क्या है?
पूछेगा कोई कभी नहीं
सेब को गिरते देख .....
क्या कोई बच्चा झपटा था
उसे उठाने, उससे खेलने या
खाने
या आई थी मुस्कान किसी चेहरे पर?
पढ़ाया गया है हमें
ऊर्जा का सिद्धांत
और एटम के ज़खीरों का गणित
वही तो पूछेंगे परचे में!
बेटी क्या जवाब दोगी
एटम के निर्माण की प्रक्रिया का?

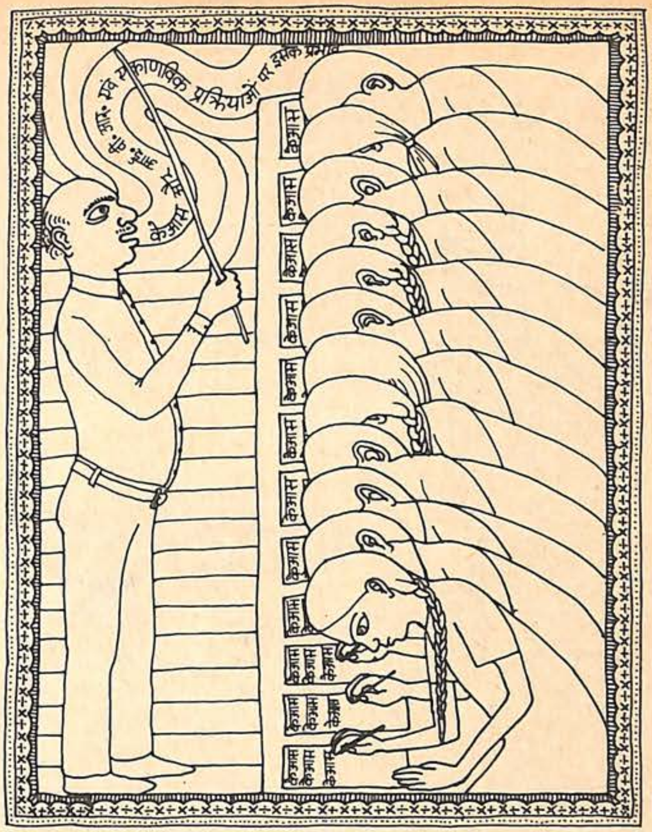

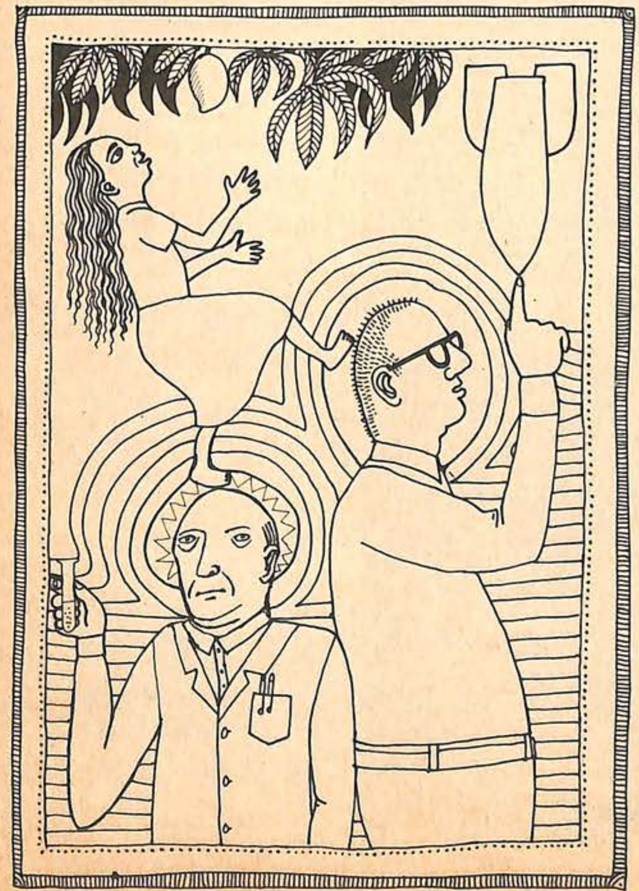

पापा जवाब देना ही क्यों
जवाब तो उनको मालूम हैं
किया है प्रश्न जिनने!
तो क्या दोगी नहीं जवाब किसी सवाल का?
कैसे होओगी पास?
पापा,
जवाब दूंगी, जरूर दूंगी, लिखूंगी-
न्यूटन्स लॉ में गिरता नहीं है सेब मेरे घर के आसपास
गिरता है कोई पत्थर की मार से गिरा
अमरुद, बेर या आम!
वनस्पतियों में होती है जान
नहीं चाहिए प्रयोगशालाएं यह सिद्ध करने के लिए
कहूंगी, मेरे आंगन का नीम, मेरी जान है!
दूंगी नहीं एटम की ऊर्जा का सिद्धांत
कहूंगी, मेरे ओठों पर
पैदा हो रही है वह ऊर्जा
जो फैलेगी दिग-दिगंत
और दुनिया का हर बच्चा मुस्काते हुए सोएगा
हंसते हुए उठेगा!
इन उत्तरों के बाद भी अगर मुझे कर दिया फैल तो पापा,
इतना ही कहूंगी
बच्चों के स्कूल से
सारे अध्यापक निकाल दिए जाएं!

चित्र : कैरन

■ रमेश दवे

मेरा पन्ना

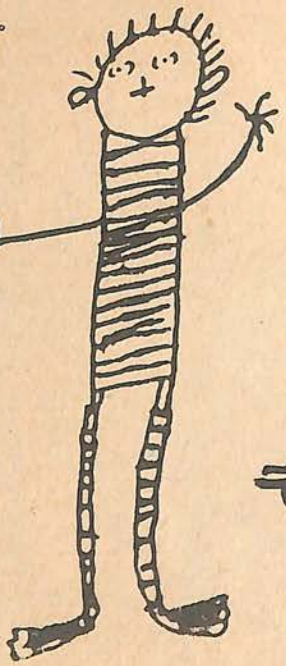

चिड़िया

एक चिड़िया के बच्चे दो,
फुदक-फुदक कर खेलें वो।
मेरे घर के आंगन पर,
खिड़की और दरवाजे पर।
मैं चाहूं लूं उन्हें पकड़,
लेकिन ये उड़ जाते फुर्र।

□ ऋतु तिवारी, तीसरी
मंडला

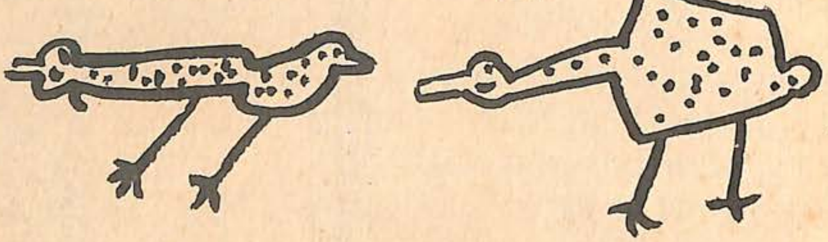

चित्र: प्रवीनसिंह, छठवीं

मास्टर साहब की बंदूक

हमारे गांव में एक मास्टर राजेन्द्र बाबू रहते थे। उनकी गांव में अच्छी इज्जत थी। उनके पास एक तीन बंध वाली अच्छी बंदूक थी। गांव गोहिन्दा के पास खूब घना जंगल था। उस इलाके में डाकू शेरा का बहुत शोरगुल मचा था। आदमी उसके नाम को सुनकर कांपने लगते थे।

एक बार मास्टर साहब को अपने दोस्त लतीफ मुहम्मद के यहां जाना था, जो गोहिन्दा से तीन मील दूरी पर स्थित गांव में रहते थे। उस गांव का रास्ता घने जंगल में से होकर गया था। मास्टर राजेन्द्र बाबू उस रास्ते पर रवाना हो गए। बिना घटना के मास्टर साहब ने उस जंगलमय रास्ते को पार किया। गांव पहुंचकर अपने दोस्त से मिले और पुनः गांव लौटने लगे।

उनके दोस्त ने मना किया, कि शाम होने लगी है अकेले मत जाओ। मगर वे नहीं माने और रोब के साथ कहने लगे, "अरे यार, शेरा मेरा क्या बिगाड़ेगा।" यह कह कर अपने मार्ग पर चल दिए।

चलते-चलते अंधेरा हो गया था। जंगल में दो आदमी लकड़ी काट रहे थे। मास्टर जी कंधे पर बंदूक टांगे चले आ रहे थे। अचानक एक आदमी की नजर जाते हुए मास्टर जी पर पड़ी। मास्टर जी को देखकर दोनों डर के मारे भागने लगे। उनकी भागने की आवाज आई तो सुनकर मास्टर जी ने भागते हुए आदमियों को देखा तो उनके होशोहवास उड़ गए। उन्होंने अपनी बंदूक देखी तो उसमें कारतूस नहीं थे। यह देखकर मास्टर राजेन्द्र प्रसाद की हालत बुरी हो गई और वे भी उन्हीं आदमियों के पीछे भागने लगे।

आदमियों ने सोचा हो न हो, यह तो शेरा ही है, सो वे बचाओ-बचाओ कहकर भागने लगे। जब वे गांव के करीब पहुंच गए तो बहुत से लोग आवाज सुनकर इकट्ठे हो गए। उनमें मास्टर जी के दोस्त लतीफ मुहम्मद भी थे। वे सब भागते हुए आदमियों के आने का इंतजार करने लगे।

जब वे आदमी निकट पहुंचे तो पता चला कि भागने वाले आदमी कल्लू और मंगू थे और पीछे मास्टर जी थे। कारण पूछा तो पाया कि कल्लू और मंगू मास्टर जी को शेरा समझकर भागे थे और मास्टर जी इन दोनों को भागते हुए देखकर भागे थे।

एक ने पूछा, "मास्टर जी, आपके पास तो बंदूक थी।"

मास्टर जी ने हंसकर कहा, "कारतूस नहीं थे।"

□ नरेन्द्र विरथरिया
गोहिन्दा (ग्वालियर)

खेल खेल में : कला

विष्णु चिंचालकर

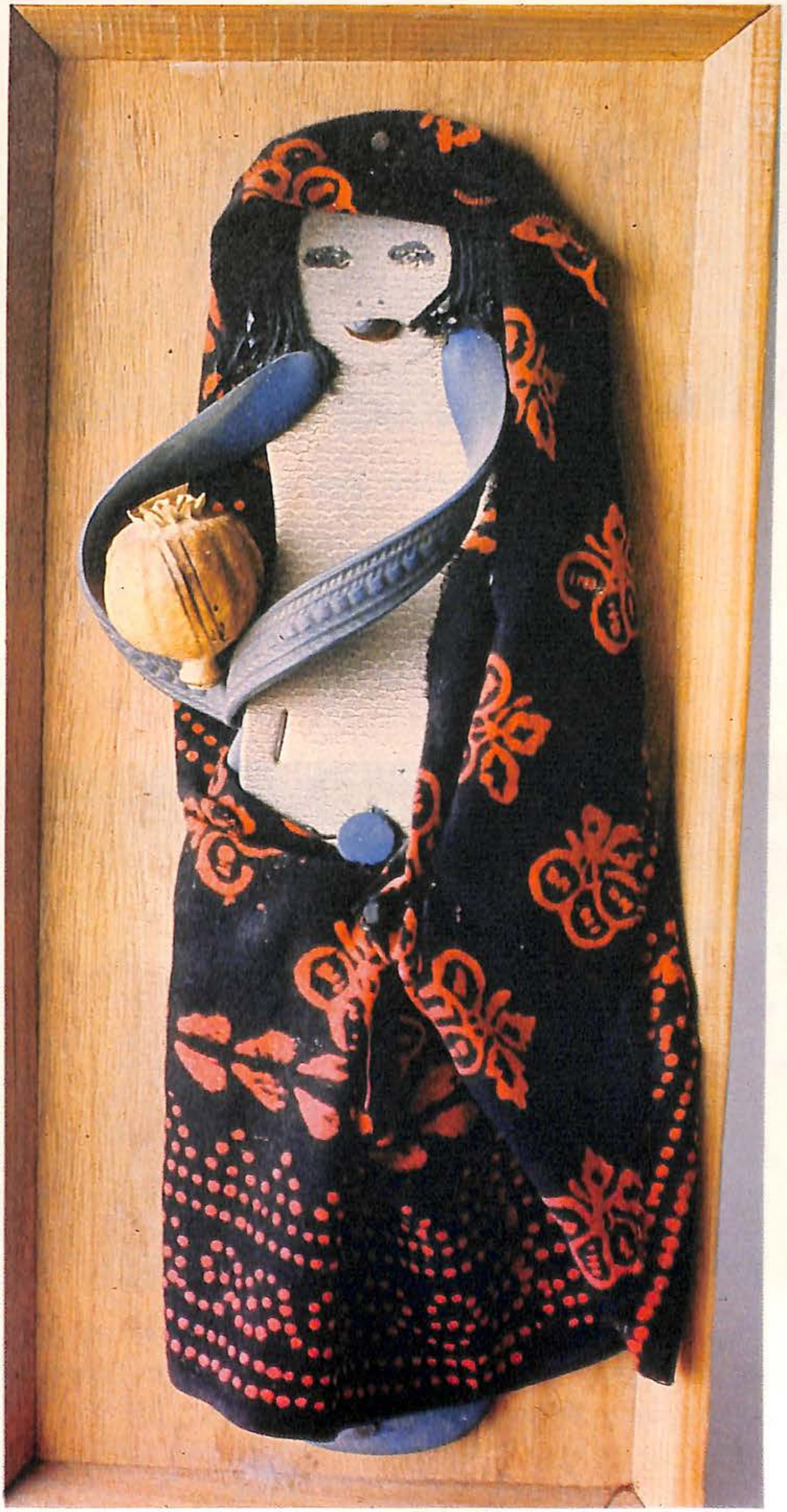

इस गुड़िया को देखकर तो तुम समझ ही गए होगे कि किस चीज़ से यह बनी है। कैसे बनी है यह समझने का प्रयास करो।

सूखी, रंगबिरंगी पत्तियों की जमावट से बन गया जंगल!

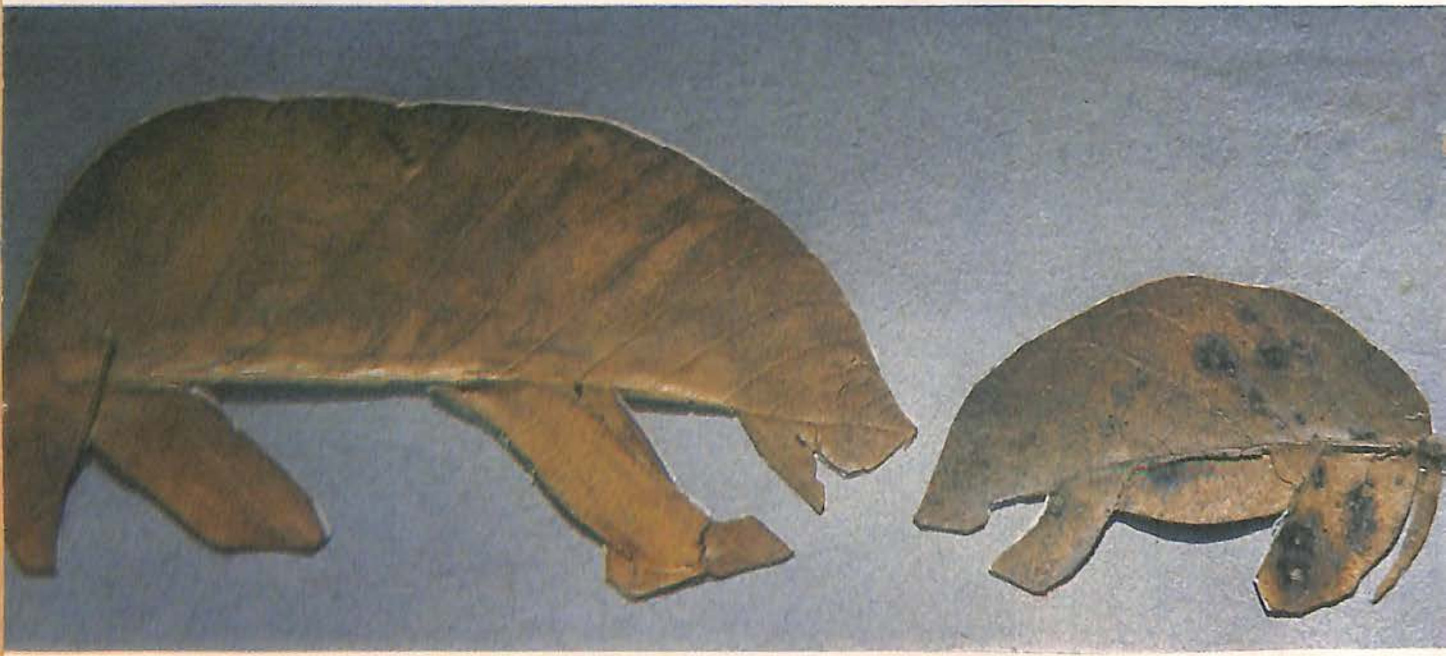

तेंदू के पत्तों से बने जानवर देखो। क्या भालू जैसे नहीं दिखाई देते? पीपल के पत्तों से बना बिल्ली का पिल्ला याद है? अलग-अलग पत्तों की विशेषता और आकार आदि बातों का अवलोकन करो; उन पर ही चित्रों का बन जाना निर्भर होता है।

महेशचंद आस्के, आठवीं पूंजापुरा, देवास

जब आया रिजल्ट

रिजल्ट ! इन महाशय का नाम सुनकर दिल में न जाने कैसी हलचल मच जाती है। बच्चे हों, किशोर या जवान सबके शरीर में ठंडी लहरें दौड़ने लगती हैं और जब रिजल्ट खुलता है तब सबका लेखा-जोखा आ जाता है, कि किसने कितनी नकल की, मटरगश्ती की, पढ़ाई की। बस, यही हाल मेरा हुआ जब मैंने 15 तारीख़ को सुना कि आज हम सबका रिजल्ट आने वाला है।

हुआ यह कि मैं तालाब पर बड़े मनोयोग से नहा रहा था, तभी मेरे साथी अजय श्रीवास्तव ने कहा, "आज चार बजे रिजल्ट आएगा।"

"हें।" मैंने मुंह नहीं खोला पर यह शब्द निकल गया। मैंने अपने आपको नियंत्रित किया और कहा, "रिजल्ट चार बजे आएगा।" फिर धीरे से कहा, 'लो हो गया उद्धार।'

अब मैं विचारों-आशंकाओं के गहरे सागर में गोताखोरी करने लगा। मेरे अंदर बैठे अनियंत्रित मन ने शंका व्यक्त की, 'हिन्दी का पेपर तो ठीक रहा, पर हां संस्कृत! वाह संस्कृत तो देवभाषा है, उसकी भगवान को चिन्ता है, हम को नहीं।' यही सोचते हुए घर आया और लेट गया।

'अरे इंगलिश!' सोचते ही दिल में कंपकंपी-सी छूटी। मेरी बुद्धि ने समाधान किया, 'चिन्ता की कोई बात नहीं, इंगलिश विदेशी भाषा भले ही हो, पर उसके बिना तो काम असंभव, वह विदेश में तो मित्र के समान है और

हां, प्रश्न बैंक में से भी बहुत फंसा था, इतना की पास हो जाने लायक।' और मैं तो भूल ही गया था। मन में अपनी भूल का प्रायश्चित किया।' पर गणित, अरे वाह फर्स्ट पेपर तो पूरा प्रश्नबैंक से फंसा था, पर सेकेण्ड पेपर ''टफ'', नहीं, नहीं वह भी फंसा था। पर प्रश्न बैंक में से कम, बहरहाल प्रथम पेपर से ही पासिंग मार्क आ जाएंगे। और फिर विज्ञान भी ठीक रहा, सामाजिक विज्ञान की तो बात ही नहीं।'

टन, टन, टन, टन,! अरे वाह फोन की घंटी बज रही है। मेरी तन्द्रा टूटी और मैं उपरोक्त शब्द कहता हुआ बहुत प्रसन्नता से उठा, जैसे सब कुछ भूल गया हूं। पर यह क्या, आश्चर्य, महान आश्चर्य, फोन की घंटी तो कुछ रुक-रुक कर बजती है। तभी मेरा ध्यान अलमारी में रखी अलार्म पर गया मैंने धीरे से कहा, 'हें! यह महारानी अपना कर्तव्य निभा रही हैं।' और तभी ध्यान घड़ी की सुईयों पर गया, चार बजे थे शाम के। मेरा दिल गले को आ गया। मैंने अपने कपड़े पहने और सायकिल उठाकर, शंकाओं से घिरा, तेजी से अपना परीक्षाफल सुनने चल दिया।

मैं स्कूल से थोड़ी दूर था, तभी कमल टेलर की दुकान के सामने कुछ साथी खड़े थे। कुछ के चेहरे उतरे हुए थे, और वे शायद सोच रहे थे, 'काश! नकल कर पाई होती।' कुछेक के चेहरे दमक रहे थे, और वे डींगे हांक रहे थे।

मैंने जाते ही प्रश्न किया, ''मेरा रिजल्ट कैसा है?''

''तुम्हारा वाह, तुम तो फर्स्टक्लास हो।'' मेरे दिल में एक खुशी की लहर उठी। मैंने उत्सुकता से पूछा, ''क्या कहा फर्स्ट क्लास?''

''और तुम्हारा?'' मैंने प्रश्न और उत्तर को गड्म-गड् कर दिया।

''मैं तो सेकेण्ड क्लास हूं।'' पर उसका मुंह उतर गया था, जैसे वह अपमानित हो गया है।

वहीं खड़े दूसरे साथी विजेन्द्र से मैंने पूछा, ''तुम्हारा रिजल्ट कैसा रहा?''

मैं तो फेल हो गया हूं।'' उसने नीचे मुंह डालकर कहा।

''ओह। आय एम सॉरी।'' मैंने उसे सांत्वना देने के लिए अंग्रेजी की पुट लगाई और आगे बढ़ गया।

मैं डरते-डरते स्कूल पहुंचा और कुछ देर तक निरीक्षण करता रहा। ऊपर बरान्डा में दसवीं के छात्र बैठे अपना रिजल्ट सुन रहे थे, और मार्कशीट ले रहे थे। जो फेल हो गए थे, उनके चेहरे देखने लायक थे। वे या तो घर जा रहे थे या फिर छात्रों से घिरे हुए उनके व्यंग्य बाणों के शिकार हो रहे थे। जो पास थे, वे बैठे हुए गपशप में मशगूल थे। सामने ही, स्कूल के अनुभवी अध्यापक शर्मा जी बैठे रिजल्ट बोल रहे थे। मैं भी वहीं जाकर नीचा मुंह करके बैठ गया।

तभी मेरा रोल नंबर बोला गया, तिरेपन हज़ार पांच सौ चौंतीस (53534)। मैंने अपराधी की तरह सिर नीचे किए हुए कहा, ''यस सर।''

उन्होंने फिर दोहराया, ''53534 फर्स्ट डिवीजन विद डिसटिंकशन इन टू सबजेक्ट।''

मैं खुशी से उछल पड़ा। मेरी तरफ कई ईषालु एवं कई प्रसन्न आंखें उठीं। फिर मार्कशीट लेने के लिए मैं बड़ी शान से चलता हुआ आया, जैसे मैंने कोई किला फतह कर लिया हो। टेबिल के पास पहुंचकर मैंने कांपते हाथों से हस्ताक्षर किए मार्कशीट ली और प्रफुल्लित उस ओर चला गया, जहां मेरी सायकिल मेरी प्रतीक्षा में खड़ी थी।

□ महिपाल सिंह बुंदेला
देरी जखीरा, टीकमगढ़

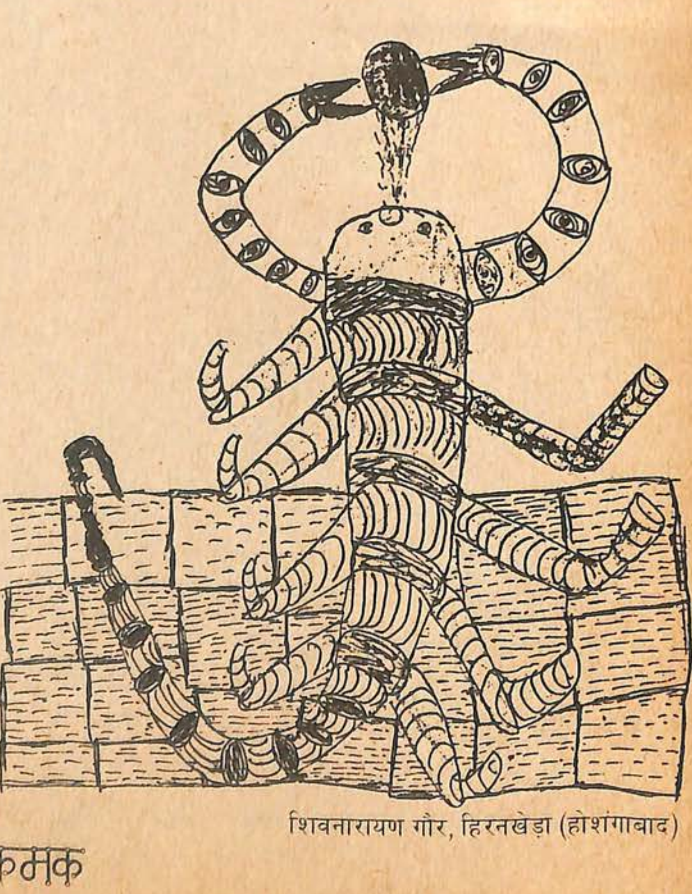

शिवनारायण गौर, हिरनखेड़ा (होशंगाबाद)

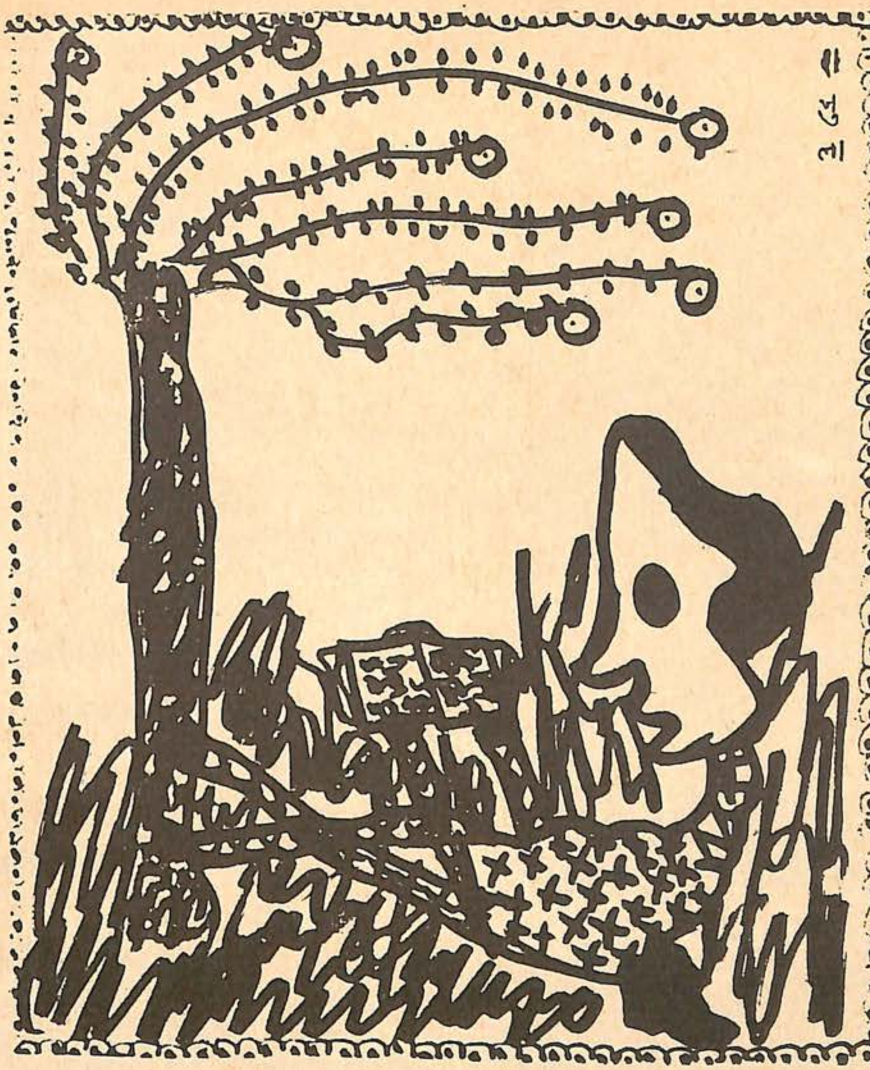

चित्र: राजुला शाह, भोपाल

पढ़ाकू घोड़ा

घोड़ा ! घोड़ा !
अरे निगोड़ा
कहां छुपा है
खाकर कोड़ा?

घोड़े को अड़ते देखा था
घोड़े को लड़ते देखा था
हमने लेकिन नहीं आज तक
घोड़े को पढ़ते देखा था

किसका नाता
किससे तोड़ा?
कहां घटाया
किससे जोड़ा?

उसके चारों ओर घास है
बिला गई पर भूख-प्यास है
डूबे हैं किताब में, लेकिन
लगता जैसे जी उदास है

घोड़ा घोड़ा
नहीं भगोड़ा
नहीं किसी ने
इसको फोड़ा

खड़े-खड़े सोता जो घोड़ा
कभी नहीं रोता जो घोड़ा
तुम्हें देखना पढ़ने में भी
छोड़ जाएगा पीछे घोड़ा

हां वह घर से
भाग गया है
हां, वह डर से
जाग गया है

घोड़ा बैठ नहीं सकता है
घोड़ा ऐंठ नहीं सकता है
तो क्या सबकी खुली पोल में
घोड़ा पैठ नहीं सकता है?

किसका घोड़ा?
किसने छोड़ा?
दे जवाब अब
वही निगोड़ा।

□ रमेश चंद्र शाह

चंदा - मामा ?

गरम-गरम गरमी के दिन थे,
गरम-गरम गरमी की रातें।
मैं आंगन में बहनों के संग
करती रहती थी बातें।

चंदा को देखा मैंने जब
मन में सोचा है ये क्या?
नानी बतलाती थीं मुझको
इसमें हैं बूढ़ी अम्मां।

मम्मी सोनू, को खिलाती
चंदा-मामा कह बहलाती।
कभी मास्टर जी से लगते
तारों को ले छड़ी पढ़ाते।

कभी बूढ़े बाबा से लगते,
चलते-चलते जो न थकते।
आखिर क्या है सच्ची बात?
मैं पहुंची दीदी के पास।

दीदी ने जो बात बताई
सुनकर भाई मैं चकराई।
मैंने बात सुनी ये जब,
चंदा मामा हैं उपग्रह।

पृथ्वी का चक्कर लगाते,
सूरज से प्रकाश पाते।
सुनकर मैं अचरज कर बैठी
मेरी बातें निकली झूठी।

□ रुचि तिवारी, चौथी
मंडला

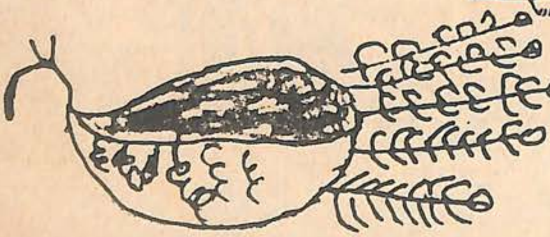

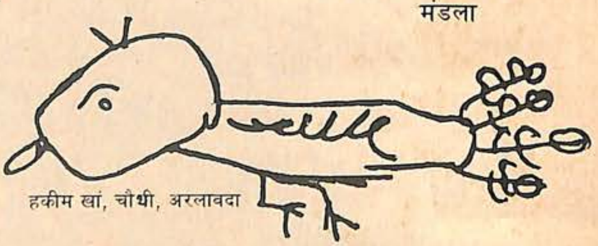

हकीम खां, चौथी, अरलावदा

योगेश होल्कर, 10 वर्ष

किसी जंगली पेड़ की फली के डंठल पर बबूल कांटा चिपकाते ही हिरननुमा जानवर दिखाई दिया। बैठक के लिए नारियल की नट्टी। जिस हथेली पर वह बैठा है वह भी है एक पेड़ की छाल ही।

अभी तक हमने फूल, पत्तियों, फलियों तथा टहनियों आदि से बने चित्र देखे। परंतु इनके अलावा आसपास की चीज़ों में भी उनके आकारों का अवलोकन करने पर उनका प्रयोग भी चित्र बनाने के लिए कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर यह चित्र देखो, पुराने खोके की पटरियों के टुकड़ों को तथा प्लाइवुड की निकली परतों की ढंग से जमावट करने पर यह चित्र उभर आया।

आम की गुठली में कभी साधू बाबा के दर्शन हुए हैं तुम्हें? कैसे होंगे? तुम तो बस रस चूसकर गुठली फेंक देते हो। अब जरा ऐसे ही एक गुठली देखने का प्रयास तो करो, कई महानुभावों के दर्शन हो जाएंगे तुम्हें! और तो और कई सारी नई बातें भी सूझेंगी!

सहमा हुआ कल

यह कहानी है एक छोटी सी लड़की की। उस लड़की की जो तमाम घटनाचक्रों ... बातों ... प्रभावों ... और परिणामों से उठे सवालों ... जिज्ञासाओं ... और उलझनों से घिर जाती है और हर किसी से हर बात जानना चाहती है, मगर सब उसको छोटा समझकर झिड़क देते हैं ... तब वह स्वयं में सिमट जाती है ... पत्रों में ... कविताओं में ... चित्रों में ... उसकी अंतर्मुखी होती जा रही भावनाओं ... जिज्ञासाओं ... चिन्ताओं ... और व्यथाओं का जवाब फिर भी कहीं मिल पाता है क्या?

■ उर्मिला शिरीष

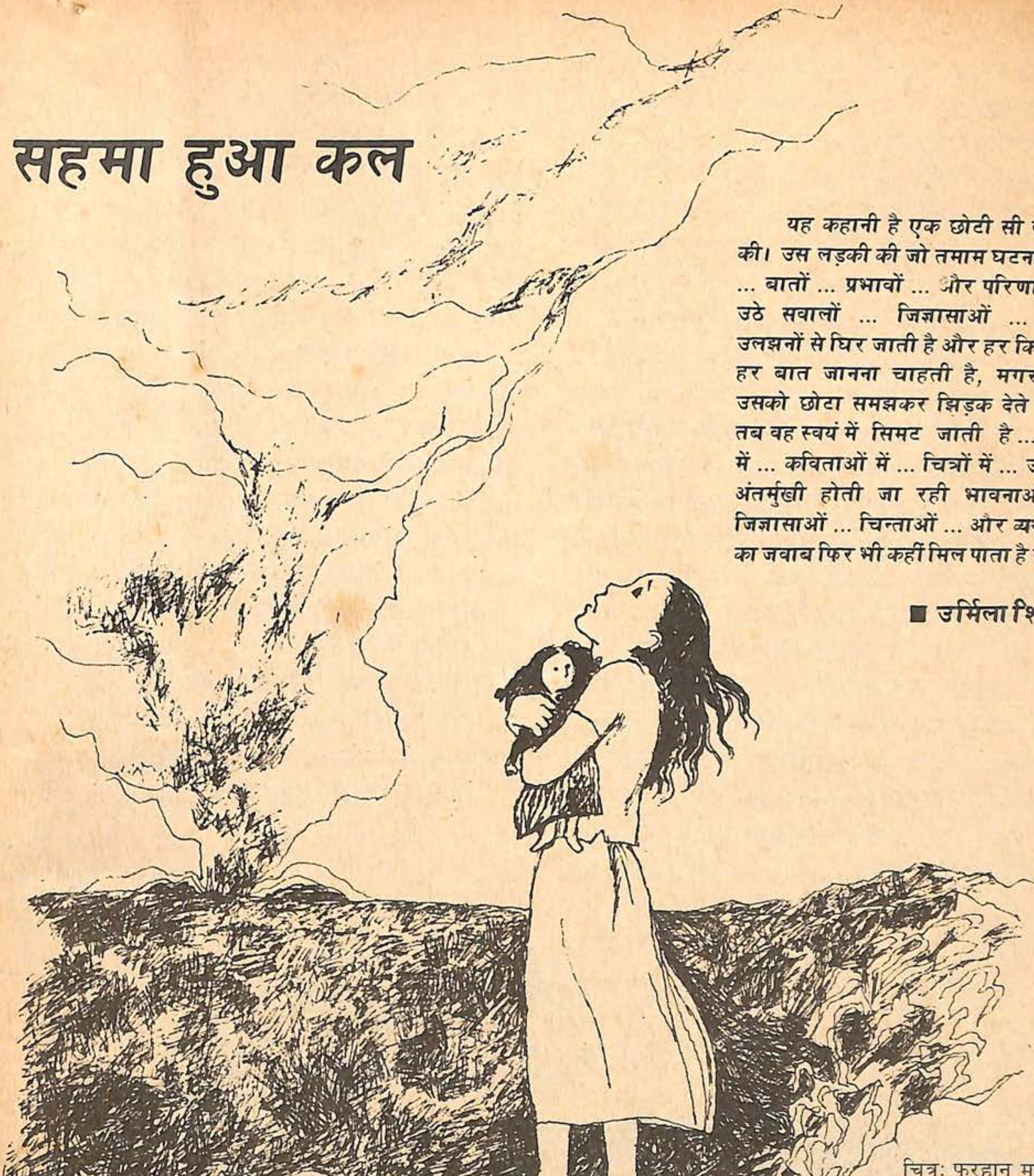

चित्र: फरहान मुजीब

'प्रिय बंटी!

जब से तुम गए हो, पत्र नहीं डाला है। जाते वक्त तुम्हारी आंखों में आंसू भरे हुए थे। बाद में हमें भी रोना आया। हम देर तक भगवान से प्रार्थना करते रहे कि तुम सकुशल और आराम से पहुंच जाओ। जब भी कोई बाहर जाता है तो बहुत-बहुत भयानक ... और अजीब-अजीब बातें मन में आती हैं ... एक्सीडेंट की .... चोरी की। मारपीट की .... दंगों की ... और भी पता नहीं कैसी-कैसी! उस दिन बहुत सूना-सूना लगता रहा था। तुमने कहा था कि हम एक-दूसरे को खूब लंबे-लंबे पत्र लिखा करेंगे। तभी से हम हर रोज़ डाक देखते हैं। अब तुम जल्दी से जल्दी पत्र लिखना। आज हमारे दिमाग में तरह-तरह की बातें

आ रही हैं, हम वो बातें सभी से पूछना चाहते हैं पर हर कोई ये कहकर टाल देता है कि अभी तुम छोटी हो, ज्यादा मत सोचा करो। अपने कोर्स का पढ़ो और खेलो। सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली ग्यारह साल की लड़की छोटी लगती है। बंटी ! कितना खेलो ... कितना पढ़ो ... कितना डांस करो ... कितनी कविताएं लिखो .... कितने चित्र बनाओ ... और भी क्या-क्या नहीं करो पर ... सोचना तो चलता ही रहता है। ठीक वैसे ही जैसे पाईप के अंदर पानी बहता है ... जैसे कल सबेरे हमारे मन में एक गीत .... ''होठों पर सच्चाई रहती है ...'' गवता रहा था ... वैसे ही ये बातें अपने आप होती रहती हैं, बहती रहती हैं ... बंटी, हमने आज के अखबार में कई नई, आश्चर्यजनक और बहुत ही ज़्यादा भयानक बातें पढ़ीं, आज के अखबार में छपा है कि ... ''विश्व के बहुत बड़े वैज्ञानिकों ने दो वर्ष का लंबा अध्ययन करके जो रिपोर्ट तैयार की है उसमें बताया है कि अगर तृतीय विश्व युद्ध हुआ तो वह परमाणु युद्ध के रूप में होगा और उसके परिणाम-स्वरूप आधी दुनिया भूख से मर जाएगी। जो देश युद्ध में भाग नहीं भी नहीं लेंगे वे भी इसकी चपेट में आ जाएंगे। यदि दोनों देशों रूस और अमेरिका के बीच युद्ध हुआ तो पता क्या होगा? आकाश में दस करोड़ टन की काली चादर फैल जाएगी, और पता बंटी, तब और भी भयानक बात होगी सूर्य की किरणें तक धरती पर नहीं आ सकेंगी ... तब कैसा लगेगा बंटी? रात जैसे अंधेरे में हम, दिन में कैसे रह सकेंगे? यानि धूप के लिए भी हम तरसेंगे। कैसा लगेगा तब? बंटी, पता तब एक अजीब बात और क्या होगी ...? रिपोर्ट में लिखा है कि- 'सूर्य की किरणें पृथ्वी पर नहीं पड़ेंगी तो सारी फसलें नष्ट हो जाएंगी।' बंटी, तब सब खेत सूख जाएंगे। अपना खेत भी सूख जाएगा। तब सब क्या खाएंगे। गेहूं नहीं होगा ... चावल नहीं होगा ... सब्जियां और फल नहीं होंगे ... फिर हम लोग खाएंगे क्या ...? धूप में सारी चीजें ...कितनी अच्छी लगती हैं ... लेकिन जब धूप ही न निकलेगी तो अंधेरा ही अंधेरा होगा ... कितना डरावना लगेगा सब कुछ ... अपन तो अंधेरे कमरे में अकेले तक नहीं जाते। घने जंगलों जैसा अंधेरा हो जाएगा ... तुम्हें याद है, जब अपन मंदसौर गए थे ... वहीं से ताकाजी के मंदिर गए थे। कितना घना जंगल था ... कैसा लग रहा था दिन में भी अंधेरा ही अंधेरा, पर कितना मज़ा आया था झरने के नीचे नहाने में। टिंकू तो तीन बार नहाया था। मोटू गुड़िया डर के मारे दूर खड़ी सबको बुलाती रही थी ... बंटी, नहीं जाओ, ... बेबी मत नहाओ ... हां तो बंटी, हम क्या लिख रहे थे? उस रिपोर्ट में आगे लिखा है कि— अगर रूस और अमेरिका के बीच युद्ध होता है तो इन देशों के जितने लोग मरेंगे उससे कहीं ज़्यादा अपने देश के

मरियम रस्सीवाला

लोग मर जाएंगे। बच भी कैसे सकेंगे लोग? जब सब लोग ज़िंदा रहना चाहते हैं तो क्यों मारेंगे ये लोग? क्यों गिराएंगे बम? अगर मरे तो सब साथ मर जाएंगे ... नहीं तो अकेले एक-दूसरे के बिना कैसे रह सकेंगे? बंटी, इतना डर लग रहा है यह सोचकर और इतनी चिढ़ आती है उन लोगों पर जो ऐसी बातें करते हैं ! क्यों करते हैं? क्या उन्हें कोई रोकता नहीं है? उनको दया नहीं आती किसी पर? अपन को तो कितनी जल्दी दया आ जाती है। एक चींटी तक को नहीं मारते। डिंगी का पिल्ला मर गया था और खरगोश को बिल्ली ने खा लिया था तो अपन तीन दिन तक रोते रहे थे ... खाना नहीं खाते थे ... कितने दुष्ट और स्वार्थी होते हैं युद्ध करवाने वाले। अपनी किताब में लिखा था न युद्ध के बारे में तब अपन जानते ही नहीं थे कुछ। जब पिक्चर में (नाम याद नहीं आ रहा है) युद्ध के दृश्य देखे थे और दीदी लोगों को बातें करते सुना था तब अपन ने छुपकर दोनों विश्व युद्धों के बारे में पढ़ा था दीदी की लायब्रेरी में चुपचाप ... एक-एक पन्ना पढ़कर रख दिया करते थे। दीदी कितनी नाराज़ होती थी कि इतने छोटे-छोटे हैं और अभी से क्या-क्या पढ़ते हैं? दिमाग पर गलत असर पड़ सकता है- पर दीदी को क्या पता है कि अपन उनकी किताबें चुरा कर छत पर छुप कर पढ़ा करते थे। बंटी, क्या अपन भी वैसे ही हो जाएंगे। जैसे जापानी हो गए थे! वो पिक्चर गए थे अपन (इसका भी नाम याद नहीं आ रहा है) उसमें दिखाया गया था न परमाणु युद्ध! कैसे जल जाते हैं आदमी! कैसे उबलने लगती है धरती! कितने भयानक दृश्य थे वे! बीच-बीच में आंखें बंद कर लेते थे अपन! कई दिन तक ठीक से सो नहीं पाए थे। क्या अपन भी वैसे ही हो जाएंगे ....? हे भगवान! ऐसा मत करना। अगर हमें कहीं भगवान मिलें या सपने में दिखें तो पता बंटी, हम क्या मांगेंगे, कहेंगे- हे भगवान, जहां-जहां भी बम रखे हों, उन्हें ख़तम कर दो ... हमारी धरती पर युद्ध मत करवाना। बंटी, तुम भी यही मांगना भगवान से। बंटी, अपन ने जो गुलाब के पौधे लगाए थे पच्चीस, उनमें से बीस में फूल खिलते हैं। खूब सुन्दर लगते हैं। हम रोज़ उनमें पानी डालते हैं ... गोड़ते हैं ... परंतु अब फूलों को देखकर बहुत दुख होता है।

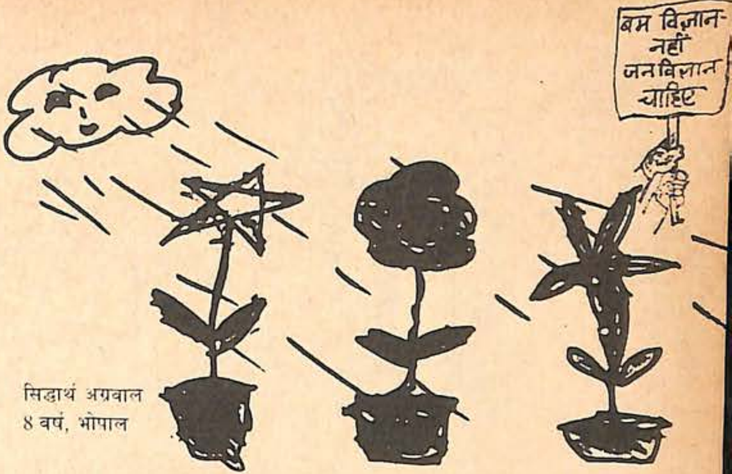

सिद्धार्थ अग्रवाल
४ वर्ष, भोपाल

लगता क्या फायदा ये भी खतम हो जाएंगे। हम रोज़ स्कूल से लौटकर उसी गुलमोहर के पेड़ पर बैठते हैं, जहां अपन गर्मी की दोपहरी में पेड़ों की डगालों के बीच बैठकर कॉमिक्स पढ़ा करते थे। बहुत मज़ा आता है बंटी। गुड़िया मोटू इतनी डरपोक है कि चिल्लाती ही रहती- "बेबी! नीचे आ जाओ, गिर पड़ोगी।" तेज हवा चलती या ज़ोर से पानी बरसता या बादल गरजते तब गुड़िया खूब रोती है। किसी को बाहर नहीं निकलने देती। कहती—"बेबी, हमें बेचारे मम्मी-बाबूजी पर इतनी दया आती है सबकी शादी हो जाएगी तो कौन रहेगा मम्मी-बाबूजी के पास। ऐसी पगलूदास है। बंटी, अगर बम गिरा तो वे फूल यानि जहां-जहां फूल होंगे जानवर होंगे... पंछी होंगे... सबके सब खतम हो जाएंगे। हम जब भी फूलों को देखते हैं तो बहुत बुरा लगता है। क्या बंटी, कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे परमाणु युद्ध हो ही नहीं। अभी हम बाहर लॉन में लेटे-लेटे पत्र लिख रहे हैं। गुलाब के फूलों के बीच फूल की बीस पंखुड़ियां तोड़ कर पत्र के साथ भेज रहे हैं। तुम रख लेना। आकाश में छोटे-छोटे बादल उड़ रहे हैं, पता बंटी, कैसा लग रहा है जैसे भूरे-भूरे खरगोश हों। पर बंटी, बम गिरा तो ये बादल भी ख़तम हो जाएंगे। फिर हम क्या देख सकेंगे....? क्या बचेगा देखने के लिए। आज हमने पांच कविताएं लिखी हैं—'युद्ध', 'बच्चे', 'फूल', 'सपना', और 'अंधेरा'।

कल के दैनिक भास्कर में हमारी चार कविताएं—'नन्हा बच्चा', 'पेड़', 'दोस्ती', और 'बादल' छपी थीं। फोटो तथा परिचय के साथ। हमारा एक चित्र भी छापा था उन्होंने। जानते हो संपादक ने क्या लिखा है—'एक नन्हीं सी बहुप्रतिभासम्पन्न कवयित्री और चित्रकार की मार्मिक और सुंदर चार कविताएं पढ़िए।' कल हमने चित्र भी बनाए थे। अच्छा बंटी, अब हल्की-हल्की बूंदे पड़ने लगी हैं। कोयल बोल रही है।

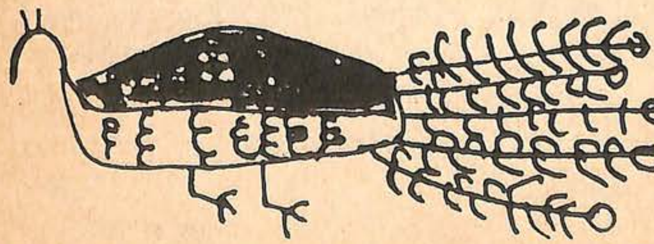

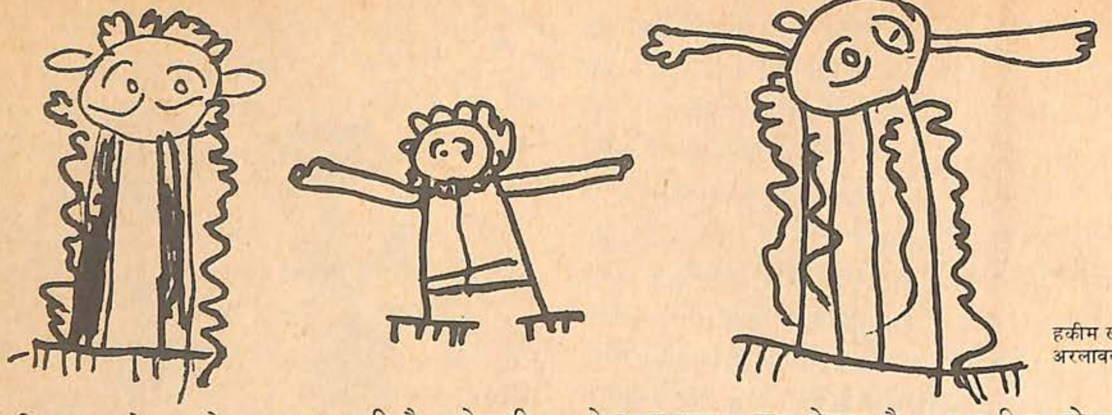

हकीम खां, चौथी
अरलावदा

एक चिड़िया हमारे सामने दाना चुग रही है... बेचारी अकेली चिड़िया।

लगता है आज रात को खूब पानी बरसेगा (हां तो बंटी, आगे उस रिपोर्ट में बताया गया है कि- 'परमाणु शीत के कारण मानसून का मौसम खतम हो जाएगा।' जब अपन मानसून नहीं जानते थे, तब कुछ नहीं लगता था। मगर जब भूगोल की किताब में मानसून, हवा, चक्रवात आदि के बारे में पढ़ा था तो अपन जून के महीने में बादलों को देखकर चिल्लाते थे। 'मानसूनी बादल आ गए।' कितना मज़ा आता था तब! छत पर बैठकर उड़ते हुए बादलों को देखते थे। बादल धीरे-धीरे आकर सिमटने लगते थे। धीरे-धीरे बूंदे गिरना शुरू होती थीं। अपन अपने शरीर पर गिरती बूंदों को गिना करते थे। फिर तेज होती बूंदों को मुंह में भरा करते थे। फिर खोबा बनाकर पानी भरते थे। फिर भींगते थे ... तब बड़ी और छोटी दीदी कितना गुस्सा होती थीं। तब मुंह बंद करके रज़ाई में छुपकर खूब हंसा करते थे, कितनी ही हंसी रोकते पर रुकती ही न थी। दीदी जब बेहद गुस्सा करने लगतीं तब अपन चुपके से चाय बनाकर दे आते थे तब दोनों ही हंसने लगती थीं। बंटी, अब हम बहुत बोर होते हैं। करो भी तो क्या? पढ़ लो ... चित्र बना लो ... कविताएं लिख लो बस! बंटी, तुम यहीं आ जाओ। फिर अपन रोज़ खेत पर चला करेंगे। ख़रगोश पालेंगे, तोता रखेंगे, अब तो रंग-बिरंगे तरह-तरह के आकार वाले बादल ...पेड़-पौधे ... पंछी

लक्ष्मी, छठवीं,

देखकर लगता सब बेकार है ... बम गिरा तो मानसून नहीं आएगा, मानसून नहीं आएगा तो पानी नहीं बरसेगा ... तब अकाल पड़ेगा ... बीमारियां फैलेंगी ... लोग भूखों मरेंगे ... भूख से मरने पर कितना कष्ट होता है होगा,क्यों कि जब अपन स्कूल से लौटते थे और जिस दिन टिफिन ले जाना भूल जाते थे उस दिन कितनी भूख लगती थी। पेट में दर्द होने लगता था। आंखें बाहर टपक जाएंगी, ऐसा लगता था। बस्ते को घसीटते हुए ... सड़क के किनारे .... पेड़ के नीचे बैठते-सुस्ताते हुए लाल मुंह किए मरियल से पांव खचोरते हुए घर आकर जो सामने रखा मिल जाता था वह जल्दी-जल्दी हाफर-धूपर खा लिया करते थे। पर जिनको कई दिनों तक खाने को नहीं मिलता वे कैसे तड़प-तड़पकर मर जाते होंगे। तड़प-तड़पकर। कोई क्या कर सकेगा तब! क्यों होगा परमाणु युद्ध! क्यों नहीं मानते सब एक-दूसरे की बात! सब देशों के आदमी एक जैसे होते हैं ... औरतें एक जैसी मन, बातों वाली होती हैं ... बच्चे भी एक जैसे होते हैं फिर क्यों मारना चाहते हैं। दया नहीं आती उनको? अपन को कितने जल्दी रोना आ जाता है। आकाश इतना बड़ा है, यहां भी इन लोगों ने बंटवारा कर लिया है। वहां भी लड़ेंगे। समुद्र इतने बड़े और विशाल हैं वहां भी युद्ध होगा! धरती तो बंटी ही है, धरती पर तो लड़ते ही रहते हैं। कितना अच्छा हो अगर बम न गिरे ... युद्ध न हो ... दंगे न हों ... इतना पैसा ... इतनी चीज़ें ... इतने आदमी ... औरतें ... बच्चे ... सब मर जाएंगे! ... ख़तम हो जाएंगे ...! फिर क्यों करते हैं बाबूजी,भाई साहब इतनी मेहनत! क्यों बनवा रहे हैं बंगला! फैक्ट्री। कैसे एक-एक चीज़ जोड़ते हैं सब ... जैसे अपन डाक टिकिट जोड़ा करते हैं या न नए सिक्के जमा करते हैं। अच्छा बंटी ... अब बंद करते हैं पत्र ... तुम भी इतना ही लंबा पत्र लिखना। टिंकू और स्वीटी को प्यार! दादा भाभी को नमस्ते बोलना ... तुम्हारी ... बेबी!'

(कहानी का एक अंश)

आश्चर्यलोक में एलिस

पिछले अंकों में तुमने पढ़ा

इंग्लैंड के एक हरे–भरे कस्बे में बाहर एलिस खेल रही थी। तभी उसने एक विचित्र खरगोश देखा जो वास्कट पहने अपनी घड़ी को बार–बार देख रहा था। वह जिज्ञासा से खरगोश के पीछे भागी। खरगोश तेजी से बिल में घुस गया, उसके पीछे एलिस भी। एलिस को लगा जैसे वह पृथ्वी के आर–पार बनी किसी सुंरग में गिर रही है और काफी देर बाद उसे ऐसा लगा जैसे वह पुआल के ढेर पर धम्म से गिरी हो। उसने अपने को एक बड़े से हाल में पाया। कुछ अजीब-सी घटनाओं से वह परेशान होकर रोने लगी। कुछ देर बाद उसे लगा कि वह अपने आंसुओं से बनी नदी में भीग रही है। इसी नदी में एलिस की मुलाकात एक चूहे व अन्य जानवरों से हुई।

एलिस और अन्य जानवर तथा परिंदे पानी में भींग गए थे। सब ठंड से ठिठुर रहे थे। मूसजी ने इतिहास का एक पाठ पढ़ाना शुरू किया, ताकि सब सूख जाएं। पर ठंड दूर नहीं हुई। डोडो बत्तख ने प्रस्ताव रखा कि सब.लोग परिषद् गुट्ट की दौड़ लगाएं। दौड़ के बाद सबको इनाम में टाफी बांटी गई। सबकी फरमाईश पर मूसजी ने एक किस्सा सुनाना शुरू किया। मूसजी बीच में रूठ गए। बातों–बातों में एलिस ने अपनी दीना पूसी का नाम ले दिया। पूसी का नाम सुनकर चिड़ियों में खलबली मच गई और एक–एक करके सब खिसक गए। एलिस ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर कोई न रूका। थोड़ी देर बाद एलिस को किसी के पैरों की आवाज सुनाई दी। उसने देखा वही सफेद खरगोश घबराया हुआ–सा आ रहा है।

खरगोश ने एलिस को मैरी-ऐन समझ लिया और काम करने के लिए आदेश देने लगा। एलिस खरगोश के घर में घुस गई। उसे वहां एक शीशी मिली जिस पर लिखा था 'मुझको पी लो।' एलिस ने जैसे ही उसे पिया, उसका कद बढ़ने लगा। उसने अपना बढ़ता हाथ खिड़की के बाहर निकाल दिया। हाथ देखकर खरगोश तथा अन्य जानवर डर गए। वे उसे घर से बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। मौका देखकर एलिस घर से निकल गई। आगे उसकी मुलाकात एक कुत्ते, रेशम के कीड़े तथा कबूतर से हुई। फिर उसे मिले मेंढक अर्दली और मच्छीराम अर्दली। बेगम साहिबा और उनके चेशायर पूस से भी एलिस की मुलाकात हुई। चेशायर पूस ने मार्ची खरगोश और हैट वाले का पता बताया।
एलिस घूमती-घामती तास के पत्तों के नगर में पहुंच गई। वहां उसने मलिका के साथ कड़ूकी खेल खेला। और फिर बने हुए महाकच्छ तथा ग्रिफिन से बहुत सारी बातें की, नाची, गाई। अब आगे पढ़ो ....

अदालत के सामने एलिस ने बड़ी भीड़ देखी। भांति-भांति के पंछी-पखेरू और छोटे-मोटे पशु-जीव सब अपने-अपने ढंग से मुकदमें में अपनी दिलचस्पी प्रकट कर रहे थे। एलिस ने लारी तोते, बतख, मेंढक, कबूतर आदि के बीच में मार्ची खरगोश और हैट वाले को दूर से ही पहचान लिया। यहां भी उनके हाथ में चाय के

प्याले थे। मगर उसने देखा कि उनके मुंह पर हवाइयां उड़ रही थीं।

एक कह रहा था, "बड़ा संगीन मुकदमा है।"

दूसरे ने बताया, "सब माल बरामद हुआ है।"

तीसरे ने कहा, "चोर हिरासत में है।"

किसी ने पूछा, "कौन पकड़ा गया है? पान का गुलाम?"

तुरंत किसी ने कहा, "बड़ा नमकहराम निकला!"

इनमें बहुत से गवाह भी थे, और सब घबराए हुए थे। कह रहे थे, "देखो क्या होता है!"

एक गवाह बड़ा उत्तेजित था। वह औरों से बोला, "मैं तो कह दूंगा, हज़ूर, मुझे कुछ पता ..."

कि इतने में सिपाही ने ज़ोर से डण्डा हिलाकर डांटा, "शोर न मचाओ! यह अदालत है! मुकदमा शुरू होने वाला है।"

गवाहों और तमाशबीनों का शोर कुछ दब गया।

एलिस ग्रिफिन के साथ इतनी तेज चाल से आई थी कि अभी तक हांफ रही थी।

ग्रिफिन बोला, "किर्रर्र! देखो कैसी जल्दी आ पहुंचे हम लोग! अभी तो बहुत वक्त है।"

एलिस- कैसी भीड़ है!

ग्रिफिन- किर्रर्र! सारे पंछी-पखेरू और जंगल-तालाब के जानवर अपनी पंचायत यहां ले आए हैं। आओ अंदर चलें।

एलिस ने अंदर आकर देखा कि यहां सब बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं। कोई ज़ोर से बात नहीं कर सकता। ये लोग भी फुसफुसाकर बातें करने लगे।

"अरे ग्रिफिन!" एलिस ने कहा, "ये सारे सिपाही, अर्दली और कचहरी के सारे अमला कैसे रोब में हैं। देखो, ज़रा इनकी वर्दियां तो देखो! लगता है जैसे बस, ताश के पत्तों की ही हकूमत हो गई है!

ग्रिफिन- एलिस, वह देखो पान का गुलाम! हथकड़ी-बेड़ी पड़ी हुई है!

"कैसा उदास है!" एलिस ने कहा, "और ग्रिफिन, वह पान का बादशाह ही तो जज बना हुआ है न? उसके ताज के नीचे 'विग' कैसी अजीब लग रही है!"

"और पान की मलिका को नहीं देखा?" ग्रिफिन ने कहा। "कैसी जली-भुनी बैठी है! अंगारा हो रही है इस वक्त! किर्रर्र!"

एलिस ने कहा, "जैसे सभी को फांसी पर तो चढ़ा देगी। ... और वह सफेद खरगोश ... कैसा बुजुर्ग बना खड़ा है। एक हाथ में सरकारी कागज है और दूसरी में नन्हा-सा बिगुल।"

एकाएक एलिस को लगा, कहीं कोई बड़ी अच्छी चीज महक रही है। बोली, "मैं भी कहूं, देर से यह कैसी महक-सी आ रही है। वह देखो, ग्रिफिन!" उसने ग्रिफिन का पंजा हिलाकर कहा, "सिपाहियों के घेरे के बीच में मेज पर कितनी सारी मिठाइयां रखी हुई हैं!"

उसने ग्रिफिन से पूछा, "फैसला सुनाने के बाद सबको बंटेंगी क्या? कैसा अच्छा हो अगर मुकदमें के बाद एक-एक सबको ..."

"किर्रर्र! जरूर!" ग्रिफिन ने हंसकर कहा, "सबसे पहले तुम्हीं को दी जाएगी।"

एलिस- हट !

ग्रिफिन- किर्रर्र! और इन पंचों को देखा? बारह हैं! गिन लो चाहे!

कई छोटे-मोटे जानवर स्लेटें रखे, उन पर स्लेट की पेंसिलें चला रहे थे। एलिस को बड़ा ताज्जुब हुआ। बोली, "ये जो स्लेट-पेंसिल लिए बैठे हैं, ये पंच हैं? कैसे भांति-भांति के पंच हैं! और सब कैसे गंभीर! वह गिलहरी है; और वह रहा मेंढक, सिर के ऊपर आंख निकाले! और उधर दुम खड़ी किए हुए वह बुद्धू-सी छिपकली है! और डोडो भी तो है उनमें। उसके बगल में मुर्गा बार-बार चोंच खोल रहा है और बंद कर रहा है। और वह तोता! मगर ये सब अभी से क्या लिखने लगे?"

ग्रिफिन- अपने-अपने नाम। इसलिए कि कहीं मुकदमें की बहस में भूल न जाएं। ह-ह! किर्रर्र!

एलिस ज़रा ज़ोर से बोल पड़ी, "कैसे बुद्धू और मूर्ख हैं।"

सफेद खरगोश ने ऊंची आवाज में चिल्लाकर कहा, "खामोश! खामोश! यह अदालत है!"

स्लेटों पर पेंसिलों के चलने की आवाज़ एकदम तेज़ हो गई। इनमें एक पेंसिल बहुत कर्कश-सा स्वर कर रही थी।

ग्रिफिन ने एलिस को समझाया, "बहुत धीरे बोलो। देखो, बादशाह ऐनक लगाकर सबको बड़े गौर से देख रहे हैं।"

एलिस की नजर कुछ स्लेटों के ऊपर गई तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। फुसफुसाकर ग्रिफिन से बोली, "अरे, ये तो वही लिख रहे हैं जो मेरे मुंह से अभी-अभी

निकला था। और बाज़ों को तो 'बुद्धू' का स्पेलिंग भी नही आता! हि हि!''

छिपकली फुसफुस करके अपने बराबर वाली से पूछ रही थी,''कट्टो जीजी,तुमने कैसे लिखा है'बुद्धू'?''

गिलहरी ने फुसफुसाकर कहा, ''देख ऐसेः 'ब', छोटा 'उ' - 'बु'। 'द' पर आधा 'ध'- उसके नीचे इस तरह से। समझी? ... 'बुद्धू'। हाय, तूने तो 'मूर्ख' भी गलत लिखा है। उसमें तो 'रेफ' लगती है।

छिपकली (फुसफुसाकर)- 'रेफ' क्या?

गिलहरी (फुसफुसाकर)- 'रेफ', 'रेफ'– ऊपर वाला 'र', देख यूं!

छिपकली– (फुसफुसाकर) असल में मेरी पेंसिल नहीं चल रही है।

छिपकली की बातें एलिस का ध्यान बार-बार अपनी ओर खींच लेती थीं। उसे कुछ चिढ़-सी लगी। उसने कहा, ''देखो मैं अभी इसकी बकबक का इलाज करती हूं। हां, नहीं तो! ध्यान बार-बार उधर ही चला जाता है!''

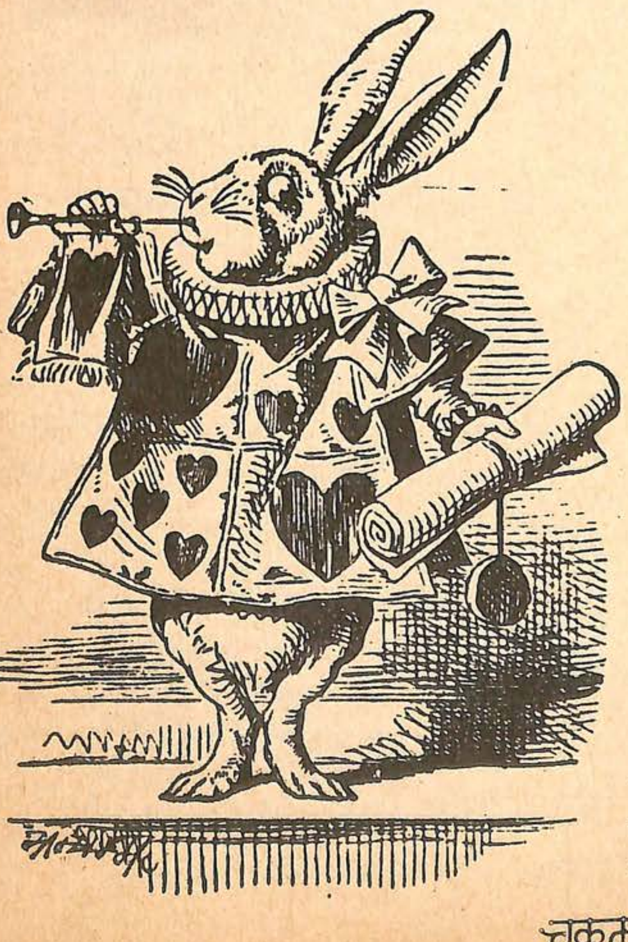

एलिस– बस देखते रहो।

एलिस ने मौका ताककर चुपके से छिपकली की पेंसिल पीछे से खींच ली।

छिपकली चिल्लाई, ''हाय जीजी, मेरी पेंसिल! अभी मेरे हाथ में थी।'' फिर उसने नीचे झुककर देखा। ''मेज के नीचे भी नहीं। तुम्हारे नीचे तो नहीं, डोडो भाई?''

डोडो– चल हट, मेरे नीचे कहां से आती!

छिपकली ने सफाई देते हुए बड़े दुख से कहा, ''मैं ज़रा रुककर मिठाई के थाल की तरफ देखने लगी थी, जहां एक बर्र आकर बैठ गई थी। बस उतने में गायब।'' फिर उदास होकर कहा, ''खैर नाखून से ही काम चलाना पड़ेगा,'' और ज़रा धीरे से कहा, ''जिससे मालूम हो कि लिख रही हूं।''

एकाएक सफेद खरगोश ने जोर से तीन बार बिगुल बजाया; फिर चिल्लाकर कहा, ''खामोश!''

बादशाह सफेद खरगोश की तरफ़ मुड़कर बोले, ''मीर मुंशी अब समय बहुत हो गया। फर्दे-जुर्म पढ़कर अदालत को सुनाओ।''

सफेद खरगोश बोला, ''हुज़ूर बादशाह सलामत, यह है फर्दे-जुर्म!'' फिर जरा-सा खांसकर उसने अपने हाथ वाला कागज पढ़ना शुरू किया–

''सावन की पूर्णिमा थी
बदली की छांह में
आंगन में बैठकर
पान की मलिका ने
खुद अपने हाथ से
बनाई मिठाइयां।
'पान के गुलाम ने
नमक हराम ने
पीछे घुस-पैठकर
इतराकर, ऐंठकर
बात की बात में
उड़ाई वे मिठाइयां ''

बादशाह ने सुनने के बाद फौरन कहा, 'पंचों अब अपना फैसला दो!''

इस पर धीरे से, समझाने के लहजे में, सफेद खरगोश ने बादशाह से कहा, ''हुज़ूर बादशाह सलामत, जरा अभी नहीं। अभी बहुत-सी कार्यवाही होनी है। गवाह आएंगे।''

बादशाह – अच्छा, अच्छा। तो पहला गवाह कौन है?

सफेद खरगोश ने फिर तीन बार बिगुल बजाया, और जोर से पुकारा, "पहला गवाह हैट वाला हाज़िर है?" एलिस ने देखा कि वह बहुत घबराया हुआ-सा, अपना वही बड़ा-सा टोप सर पर रखे आ रहा है। प्याला मगर अब भी है हांथ में, और दूसरे हाथ में आधा खाया हुआ टोस्ट भी।

ग्रिफिन (फुसफुसाकर)– और देखो, पीछे-पीछे मार्ची खरगोश भी चला आ रहा है, मोटे चूहे के साथ।

एलिस ने धीरे से कहा, "टी-पार्टी में इसने मेरी तौहीन की थी। अब मज़ा आएगा बच्चू को! बड़ा हैट वाला आया कहीं का!"

ग्रिफिन (धीरे से)– दो फुट का टोप तो सर पर हैइ है! किर्रर्र!

हैट वाला एक हाथ में प्याला और दूसरे में टोस्ट लिए कांपता-लड़खड़ाता जाकर बीच में खड़ा हो गया और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "हुज़ूर, इसके लिए मुझे माफ किया जाए। हुज़ूर, मैंने यह प्याला अभी खतम भी नहीं किया था कि, हुज़ूर एकाएक मेरी पुकार हो गई।"

बादशाह– तुम्हें चाय खत्म करके आना चाहिए था। चाय पीने तुम कब बैठे थे?

हैट वाला सकपकाकर मार्ची खरगोश की तरफ देखने लगा कि वह जल्दी से उसे बता दे, मगर वह खुद भी धीरे-धीरे हिसाब लगा रहा था।

हैट वाला– अ ... अ ... अ ... मेरा ख़याल है मार्च की शायद चौदह तारीख थी ... चौदह!

पीछे से मार्ची खरगोश ज़ोर से बोल उठा, "पन्द्रह!"

मार्ची खरगोश के पीछे से मोटा चूहा भी अपनी औंघती आवाज़ में ज़ोर देकर बोला, "सोलह!"

बादशाह– पंचों, सब लिख लिया जाए।

एलिस ने पंचों की स्लेटों की तरफ देखा तो उसे बड़ा अज़ीब लगा। वह आहिस्ता से ग्रिफिन से बोली, "देखो तो, मरे वे सब तीनों तारीखें लिखकर उन्हें जोड़ रहे हैं। और देखो। कइयों ने उनके शिलिंग-पेंस भी निकालकर रख दिए।"

ग्रिफिन ने मुस्कराकर केवल धीरे से कहा, "किर्रर्र!"

बादशाह ने हुक्म दिया, "यह टोप सर से उतारो!"

हैट वाला गिड़गिड़ाया, "हुज़ूर सरकार अदालत, मर जाऊंगा। यह तो मैं बेचने के लिए सर पर रखता हूं हुज़ूर! कीमत उस पर लिखी हुई है। हुज़ूर, मेरा अपना कोई हैट नहीं। मैं तो हैट-टोपी बेचने वाला हूं, माई-बाप!"

ग्रिफिन ने धीरे-से किर्रर्र की आवाज़ की और एलिस का ध्यान मलिका की तरफ खींचा, "देखो, पान की मलिका ने भी ऐनक लगा ली है और बहुत गौर से हैट वाले को देखने लगी है!"

एलिस (आहिस्ता से)– तभी यह और घबरा उठा है। कैसा पीला पड़ गया एकाएक!

बादशाह– अपना बयान दो ठीक-ठीक। और घबराओ मत, नहीं तो यहीं तुम्हारी गरदन नापी जाएगी। याद रक्खो।

यह सुनकर तो वह बेचारा और भी घबरा गया। मारे घबराहट के जूते भी ढीले हो गए। बस, मुंह बाए मलिका की ओर देखे जा रहा था। एक टांग पर खड़ा रहना भी उसके लिए मुश्किल हो गया। अजीब हाल था उसका!

ग्रिफिन एलिस से बोला, "और मलिका का चेहरा तो देखो, जैसे कच्चा ही चबा जाएगी इसे।"

एलिस ने कहा, "हाय, घबराहट के मारे बेचारे का दम सूखा जा रहा है।" फिर बहुत आश्चर्य से बोली, "अरे देखो तो, उसने जल्दी में टोस्ट के बजाय प्याला ही काट लिया दांत से! च्-च्-च्!"

एकाएक एलिस को लगा, कोई उसे दबा रहा है एक तरफ से। झल्ला के बोली, "अरे, यह कौन है जो पसर के अंगड़ाई ले रहा है! अच्छा, मोटे चूहे साहब हैं! सो रहे थे!"

मोटा चूहा— एलिस, यह क्या बात है? तुम तो मुझे दबाए ही चली जा रही हो!

एलिस— मैं? ... मैं शायद बढ़ रही हूंगी। बढ़ रही हूं— फैलूंगी ही। क्या करूं मोटू!

मोटा चूहा— मुझको मोटू न कहो। तुम्हें यहां बढ़ने का कोई अधिकार नहीं! यह अदालत का कमरा है!

एलिस— वाह जी, वाह! क्या फिजूल की बात है! तुम बढ़ते हो कि नहीं, मोटू मूस?

मोटा चूहा— बढ़ते हैं तो ढंग से बढ़ते हैं, न कि तुम्हारी तरह मज़ाक करते हैं। ... नहीं मानती हो तो लो, फैलो। मैं जाता हूं अदालत के दूसरी तरफ बैठने।

ग्रिफिन ने धीरे से कहा, "एलिस, उधर देखो!"

पान की मलिका— रुको, पहले ज़रा वह मिसिल तो लाओ जिसमें उन गवैयों के नाम हैं, जिन्होंने हमारे पिछले दरबार में गाना गाया था।

यह सुनकर ही हैट वाला और भी बेंत की तरह थर-थर कांपने लगा।

बादशाह— कांपने और घबराने से काम नहीं चलेगा। सीधे अपना बयान दो, नहीं तो यहीं तुम्हारी गरदन उतारी जाती है!

हैट वाला— हुज़ूर, बादशाह सलामत, माई-बाप हैं। मैं एक गरीब आदमी हूं। मैंने अभी चाय भी शुरू नहीं की थी हुज़ूर! कोई हफ्ता-दस दिन हुआ होगा, हुज़ूर, जब से कि मक्खन और टोस्ट भी पतला होने लगा हुज़ूर, जबसे चाय की टिम-टिम ..."

बादशाह— किसकी टिमटिम ? ऐं?

हैट वाला— यह चाय से शुरू हुआ हुज़ूर!

बादशाह— हां, हां, 'च' से ही शुरू होता है 'चाय' का शब्द। तुम हमें इतना अपढ़-गंवार समझते हो? (डांटकर) चलो, आगे बढ़ो!

हैट वाला- हुज़ूर, मैं गरीब आदमी हूं। ... तब से हुज़ूर, सब चीज़ें मेरे लिए टिम-टिम करने लगीं। तब मार्ची खरगोश ने ही मुझसे कहा था कि ...

मार्ची खरगोश— मैंने नहीं कहा था।

हैट वाला (जोर से)— कहा था!

मार्ची खरगोश— नहीं कहा था। ... मैं इनकार करता हूं कि कहा था।

बादशाह— वह इनकार करता है ... छोड़ो उसकी बात।

हैट वाले ने कहा, "खैर! हां, तो फिर वह मोटे चूहे ने ही ..." इतना कहकर वह रुक गया। मोटे चूहे की धीरे-धीरे खुर्राटे लेने की आवाज आ रही थी। वह आगे बोला, "मोटे चूहे ने ही कहा था। ... और फिर, और फिर मैंने एक टुकड़ा और टोस्ट-मक्खन का काटा ..."

बादशाह ने एकदम उसे टोककर पूछा, "रुको, रुको, रुको! मोटे चूहे ने क्या कहा था?"

हैट वाला—मुझे कुछ याद नहीं आ रहा ठीक-ठीक।

बादशाह— तुम्हें याद करना होगा, नहीं तो अभी तुम्हारा सर उड़ाते हैं!

मारे दहशत के हैट वाले के हाथ से प्याला और टोस्ट गिर पड़े।

हैट वाला गिड़गिड़ाकर बोला, "हुज़ूर सरकार अदालत, हुज़ूर माई-बाप हैं। हुज़ूर, जान बख्शी हो। हुज़ूर, याद नहीं आता, मोटे चूहे ने क्या कहा था।" मोटा चूहा इत्मीनान से खुर्राटे ले रहा था। आगे हैट वाले ने कहा, "मैं बहुत गरीब आदमी हूं। हुज़ूर मेरी जान बख्शी की जाए!"

बादशाह— तुम बहुत गरीब बयान देने वाले आदमी हो!

एकाएक, 'हि-हि-हि खि-खि-खि' की आवाज आई। अदालत में कोई तमाशबीन पशु हंस पड़ा था। फौरन कुछ सिपाहियों ने उसकी मुश्कें कसकर उसे बोरे में बंद कर दिया और उस पर बैठ गए। वह अंदर ही अंदर कराह रहा था और सिपाही उसको ऊपर से और भी दबाए जा रहे थे।

एलिस ने धीरे-से पूछा, "ग्रिफिन, ये क्या कर रहे हैं?"

ग्रिफिन (धीरे से)— यह जो उस खि-खि-खि करने वाले बिज्जू को अभी बोरे में बंद किया गया!

एलिस— हां।

ग्रिफिन (धीरे से)— इसी को तो कहते हैं कि कानून के शिकंजे में कस लेना।अदालत में हंसना कानूनी जुर्म है।

एलिस (धीरे से)– हां, जुर्म तो हुई। मगर उस बोरे के मुंह पर तो एक सिपाही बैठ भी गया। यह क्यों?

ग्रिफिन (धीरे से)- इसी को 'काबू' कहते हैं। तुमने अखबारों में अक्सर पढ़ा नहीं, 'और परिस्थिति पर काबू पा लिया गया'?

एलिस (धीरे से)– अच्छा, यही होता है वह! अब समझ में आया।

बादशाह ने हैट वाले से कहा, "सुनो। अगर तुम्हें और कुछ नहीं कहना है, तो तुम बैठ जाओ।"

हैट वाला– हुज़ूर, मैं तो कब से पड़ा गिड़गिड़ा रहा हूं, बैठने की कौन कहे हुज़ूर!

बादशाह- तब तुम उठ जाओ!

हैट वाले ने जोर-जोर से दुआएं देनी शुरू कीं– "हुज़ूर का इकबाल! हुज़ूर की परवरिश है! ..." अदालत में फिर कोई खिलखिलाकर हंस पड़ा। और पहले की तरह उस हंसने वाले को भी बोरे में बंद कर दिया गया और उस पर एक सिपाही हुमसकर बैठ गया।

एलिस ने एक इत्मीनान की सांस ली। बोली, "चलो, अब जरा कुछ देर तो शांति रहेगी।"

हैट वाला अब तक कुछ सुस्थिर हो चुका था। धीरे से बोला, "अब जरा इत्मीनान से एक घूंट चाय का पी लूं। परमात्मा करे, मलिका को गवैयों की मिसिल में मेरा नाम न मिले!"

बादशाह ने हाथ उठाकर हुक्म दिया, "हैट वाले, अब तुम जा सकते हो!"

जान बची और लाखों पाए! हैट वाला बादशाह को दुआएं देता अदालत के कमरे से तीर की तरह एकदम बाहर भागा।

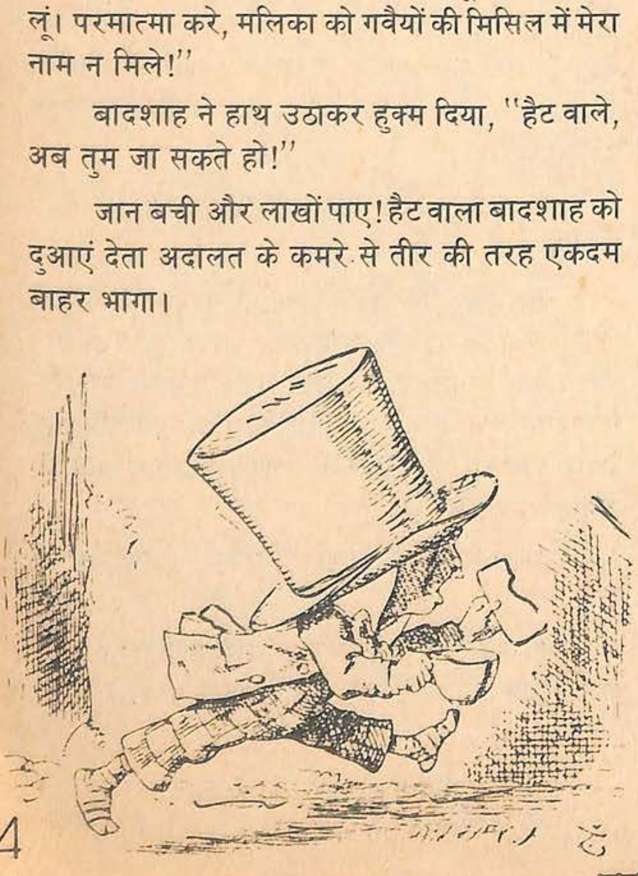

साथ ही साथ मलिका ने भी चुप लगाया, "मगर अदालत के बाहर होते ही सर उड़ा दो उसका!"

सिपाही उसे पकड़ने के लिए दौड़े।

एलिस ने हंसते हुए धीरे से कहा, "कैसा तीर की तरह गया है! अब एक-दो मील से इधर तो इनके हाथ नहीं आ सकता। जूते भी तो यहीं छोड़ गया है!"

ग्रिफिन (धीरे से)–मगर चाय का प्याला भागते दम भी हाथ में था।

बादशाह ने हुक्म दिया, "दूसरे गवाह को हाज़िर करो!"

सफेद खरगोश ने फिर तीन बार बिगुल बजाकर पुकारा, "दूसरा गवाह, मुसम्मात बावर्चिन हाज़िर है?"

बावर्चिन भीड़ में से निकलकर आगे आई। उसके हाथ में मिर्चों का डिब्बा था। उसके आते ही मिर्चों की ऐसी धसक फैली कि एकाएक कई पशु-पक्षी छींकने लगे।

एलिस ने छींककर ग्रिफिन से धीरे से पूछा, "मिर्चों का डब्बा क्या इस मुकद्दमें के लिए ज़रूरी है?"

ग्रिफिन (धीरे से)–किर्रर! इसके बिना वह जिंदा नहीं रह सकती।

बादशाह ने हुक्म दिया, "बयान दो अपना!"

बावर्चिन–हुज़ूर, मुझे कुछ नहीं कहता!

बादशाह ने सफेद खरगोश से धीरे से पूछा, "मीर मुंशी, अब क्या करें?"

सफेद खरगोश–हुज़ूर, हुज़ूर, बादशाह सलामत, इससे अब जिरह करें!

बादशाह–ओह, अच्छा! हां, तो..... बताओ, मिठाइयां किस चीज़ से बनती हैं?

बावर्चिन–हुज़ूर, खास चीज़ उनमें मिर्चें होती हैं।

मोटा चूहा जैसे एकाएक सोते से चौंक उठा हो। वह अपनी भारी-सी, कुछ ऊंची, अलसाई आवाज में बोल उठा, "नहीं, शीरा!"

मलिका ने गुस्से से चिल्लाकर हुक्म दिया, "मैं कहती हूं, फौरन पकड़ लो इस मोटे चूहे को। उड़ा दो गरदन इसकी! निकाल दो बाहर अदालत से इस मोटे चूहे को! कस लो उसको बोरे में! और उखाड़ लो मूंछें उस मोटे चूहे की!"

इन हुक्मों से अदालत में एक हंगामा खड़ा हो गया। मोटे चूहे को पकड़ने, बांधने, निकालने के सिलसिले में काफी बावेला मच गया। मोटा चूहा अपनी जान बचाने

के लिए इधर-उधर छिपता फिरा, और सिपाही उसके पीछे हलकान।

"किधर छिप गया?" एक ने पुकारा।

"मार्ची के पीछे!" दूसरे ने घोषणा की।

दो सिपाही उसे पकड़ने दौड़े तो तीसरा चिल्लाया, "वह गया उधर कोने में!"

फिर एक ने सावधान किया, "उधर से छेके रहना!"

आखिरकार हाथ आ ही गया।

मोटा चूहा रिरियाकर बोला, "हाय, हाय, मैंने तो कुछ नहीं किया था। मुझे तो कुछ खबर नहीं, क्या हुआ! मुझे छोड़ दो! भैया, मिठाई में मिर्चें ही पड़ती हैं!"

सिपाही—अबे, रह जा। बातें बना रहा है। ले चलो इसको!

मोटा चूहा—दुहाई है, दुहाई है! इन्साफ होना चाहिए। मैं एक गरीब चूहा हूं। भैया मार्ची खरगोश, बचाओ।

मार्ची खरगोश चुपचाप अपनी जगह पर कान दबाए बैठा रहा।

'ले चलो इसको!' 'ले चलो बाहर!' के शोर में सिपाही उसे बाहर घसीटकर ले गए।

बाहशाह—चलो, किस्सा पाक हुआ। अब दूसरा गवाह बुलाओ!

सफ़ेद खरगोश ने तीन बार बिगुल बजाया और पुकार कर कहा, "खामोश! खामोश!"

बाहशाह ने धीरे-से मलिका से कहा, "प्यारी मलिका, अबकी तुम्हीं जिरह करो नए गवाह से। मेरे सर में दर्द होने लगा है।"

एलिस ने चुपके से कहा, "देखें, अबकी किसे बुलाता है!"

सफेद खरगोश—एलिस हाजिर है?

एलिस एकदम चौंककर बोली, "आंय! मैं?" फिर तुरंत ही सुस्थिर होकर कहा, "हां, यह रही मैं!"

एलिस का कद इस बीच काफी बढ़ गया था। जब उठी तो उसके कपड़ों से हिलकर बहुत से 'पंचों' की मेजें कुर्सियां वगैरह गिर पड़ीं और पंच लोग, यानी मेंढक, तोता, बत्तख, गिलहरी, डोडो, चूहा इत्यादि सब चें-में करते हुए एक तरफ को लुढ़क गए। इस पर अदालत के कमरे में जो हाय-तोबा मची, वह जल्दी शांत नहीं हुई।

एलिस ने कहा, "हाय बेचारे, मेरी टक्कर से सब पंचों की मेजें गिर गईं! मैं अभी सबको ठीक से रखे देती हूं!"

तोता—टैं! टै! टैं!... मैं पिस गया तेरे नीचे दबकर अरे डोडो!

बत्तख—क्वैक्! क्वैक्! मेरा पंजा मेज के पाए के नीचे आ गया। उफ! क्वैक्! क्वैक्!

चूहा—चीं! चीं! चीं! मुर्गे रे मुर्गे! देख तेरी चोंच मुझे चुभ गई!

मुर्गा—कुड़क्! कुड़क्! कुड़क्! अरे, मैं औंधे मुंह जो गिरा नीचे आकर!

मेंढक—टर्र! टर्र! टर्र! मैं तो पिच्ची ही हो गया था!

छिपकली—चू-चू-चू! हाय-हाय! चू-चू-चू! मेरी दुम तो फट ही गई! हाय-हाय! चू-चू-चू!

गिलहरी—खैर, छिपकली की दुम तो फिर जम जाएगी। यह कहो, जान बच गई!

धीरे-धीरे यह सब शोर कुछ मद्धिम हुआ।

एलिस—बादशाह सलामत, अब तो सब अपनी-अपनी जगह रखे गए! सबको उनकी सीटें भी मिल गईं!

बादशाह ने चेतावनी देने के स्वर में कहा, "जब तक सब ठीक से नहीं बैठ जाते, गवाही नहीं ली जाएगी!"

एलिस—सबको तो बिठा दिया ठीक से मैंने....

'चू-चूच' और 'अइ-अइ' करके कराहने की आवाज अब भी आ रही थी। एलिस ने गौर से देखा तो छिपकली उलटी रख गई थी। उसने उसे सुलटा करके बिठा दिया, फिर उसने आप ही आप धीरे से कहा, "मगर इससे मुकद्दमें पर तो कोई असर पड़ेगा नहीं! चाहे ये पंच सर के बल बैठें चाहे सीधा ऊपर मुंह करके।

स्लेट पर पेंसिलें फिर किर्र-किर्र करके जोरों से चलने लगीं।

सफेद खरगोश—खामोश! खामोश! अब अदालत की कार्यवाही शुरू होती है।

बाहशाह—हां, तो इस मामले में क्या और कितना जानती हो?

एलिस—कुछ नहीं।

बादशाह—कुछ भी नहीं? ज़रा भी नहीं?

एलिस—रत्ती-भर भी नहीं।

बादशाह गम्भीर स्वर में बोला, "यह बहुत ज़रूरी बात है, पंचो!"

सफेद खरगोश ने बात को ठीक करने के ढंग से, गरदन हिलाते हुए, आहिस्ता से कहा, "हुज़ूर, बाहशाह सलामत, आपके कहने का मतलब 'गैर-ज़रूरी' है न? गैर-ज़रूरी', 'ज़रूरी' नहीं।"

बादशाह ने जवाब दिया, "हां, गैर-ज़रूरी, बहुत गैर-ज़रूरी बात है।" इसके बाद वह सोचता हुआ-सा आप ही आप दोहराने लगा, 'ज़रूरी.... गैर ज़रूरी?.... गैर ज़रूरी...... ज़रूरी.....।'

एलिस ने पंचों को देखा तो उनमें से कुछ 'जरूरी' लिख रहे थे, कुछ 'गैर-ज़रूरी'। ऊंह!" उसने सोचा, 'इससे कौन बड़ा फर्क पड़ा जाता है!'

ग्रिफिन ने बहुत धीरे से एलिस से कहा, "एलिस, देखो, उधर बादशाह अपनी नोट-बुक में कुछ लिख रहे हैं।"

बादशाह बोला, "खामोश हो जाओ!" फिर खांसकर उसने कहा, "हमारी दफा बयालीस कहती है कि जो एक मील से ज्यादा लंबे लोग हैं, उनको बाहर कर दे!"

इस पर एक हल्का-सा शोर अदालत में होने लगा। सब आपस में इस तरह की कानाफूसी करने लगे—

"एलिस, एक मील लंबी!" "नहीं!" "क्यों नहीं?" "बल्कि ज्यादा!"

एलिस—मैं तो कहीं नहीं एक मील लंबी!

बादशाह ने बहुत जोर देकर कहा, "हो!"

मलिका भी बहुत तीखी आवाज में कड़ककर बोली, "कैसे नहीं हो! बल्कि करीब-करीब दो मील लंबी हो।"

एलिस—खैर चाहे जितनी भी लंबी होऊं, मैं तो यहां से बाहर नहीं जाऊंगी। मुकदमा पूरा देखकर ही जाऊंगी। और फिर यह असली कायदा नहीं मालूम होता। आपने अभी-अभी बनाया है।

बादशाह—नहीं, यह हमारे यहां की सबसे पुरानी दफा है।

एलिस—तब तो यह पहली दफा होनी चाहिए थी।

बादशाह उसके तर्क से भौंचक्का-सा रह गया। उसके मुंह से केवल आयं! ही निकला। उसने नोट-बुक फट् से बन्द कर दी। फिर कुछ कांपती हुई-सी आवाज में बोला, "पंचो.... अ.... पंचों.... अ.... अब सोच लो अपना फैसला!"

सफेद खरगोश बड़े उत्साह और जोश से एकाएक बोला, "हुज़ूर सरकार अदालत, घबराएं नहीं! अभी और सबूत पेश होंगे। यह देखिए, यह पर्चा अभी पड़ा मिला है।"

मलिका—क्या लिखा है इसमें?

सफेद खरगोश ने कहा, "हुज़ूर सरकार, मैंने अभी इसे खोला नहीं है।" फिर अपने शब्दों को बहुत गंभीरता से तोल-तोलकर बोला, "मगर मालूम होता है कि मुज़रिम का लिखा दस्तीखत है। किसी के नाम लिखा गया है।"

बादशाह— ज़रूर, ज़रूर। किसी को ज़रूर लिखा गया है। किसी को नहीं लिखा गया है, यह कैसे हो सकता है?

बत्तख पंच ने इस पर 'क्वैक्! क्वैक्!' करके पूछा, "हुज़ूर यह किसको लिखा गया है, ज़रा मालूम किया जाए!"

सफेद खरगोश— हुज़ूर सरकार, इस पर तो कोई अता-पता नहीं! ऊपर तो कुछ लिखा नहीं मिलता, कम से कम!

बादशाह ने उसे खोलने का हुक्म दिया। मीर मुंशी सफेद खरगोश ने उसे खोला।

खोलते ही कुछ ताज्जुब से उसने कहा, "अरे हुज़ूर, यह खत नहीं, यह तो कुछ पद हैं, पद। किसी ने कुछ पद्य लिखे हैं।"

तोता पंच— टांय! टांय! टांय! हुज़ूर लिखावट मुलज़िम की तो नहीं, ज़रा दरयाफ्त किया जाए।

सफेद खरगोश— नहीं हुज़ूर। मुलज़िम की लिखावट नहीं है। यही बात तो और भी अचम्भे में डालती है।"

बादशाह ने इस बात पर गंभीरता से सोचकर कहा, "यह भी हो सकता है कि मुलज़िम ने किसी दूसरे की लिखावट में बनाकर लिखा हो।"

कुछ पंच एक स्वर से बोले, "हां, हां। हो सकता है। ज़रूर ज़रूर!"

पान के गुलाम ने गिड़गिड़ाकर अर्ज की, "हुज़ूर सरकार, बादशाह सलामत, यह आपका गुलाम सिर्फ़ इन्साफ़ की भीख मांगता है। इसका क्या सबूत कि यह पर्चा मैंने लिखा। इस पर तो किसी का दस्तख़त भी नहीं है।"

बादशाह ने बड़े उत्साह से मेज़ पर मुक्का मारकर कहा, "अगर तुम ईमानदार आदमी होते तो पर्चे पर दस्तखत ज़रूर करते। न करने से तो तुम्हारा जुर्म और भी संगीन हो जाता है!"

बादशाह के इस तर्क पर चारों ओर से बधाइयां मिलने लगीं।

"क्या दो टूक इंसाफ है!"

"वाह-वा। इसको कहते हैं इंसाफ!"

"वाह, खूब कहा!"

"क्यों न हो, जब अदालत की कुरसी पर खुद बादशाह सलामत विराजमान हैं!"

मलिका ने ऊंचे स्वर में घोषणा की, " जुर्म साबित हो गया!"

इस पर एलिस ने भी जोर से कहा, "क्या साबित हो गया, खाक! कुछ भी साबित नहीं हुआ। अभी किसी को यह भी तो मालूम नहीं, कि पर्चे में लिखा क्या है।"

बादशाह— हां, हां, पढ़ दो उसको।

सफेद खरगोश— हुज़ूर सरकार, कहां से शुरू करूं?

बादशाह ने गंभीरता से आदेश दिया, "शुरू से पढ़ना शुरू करो और पढ़ते जाओ; जब तक पूरा पर्चा खत्म न हो जाए! जब खत्म हो जाए, तब रुक जाओ। बस। समझ गए?"

सफेद खरगोश बोला, "जी हुज़ूर, सरकार।" और उसने धीरे-धीरे, एक-एक शब्द और पंक्ति पर रुकते हुए पर्चे को पढ़ना शुरू किया—

"मुझे बताया सबने आकर
तुम पहुंचे उस महिला के घर।
एक व्यक्ति को मेरा परिचय
दिया– कि सज्जन हूं मैं निश्चय
तैर नहीं सकता पर निर्भय।

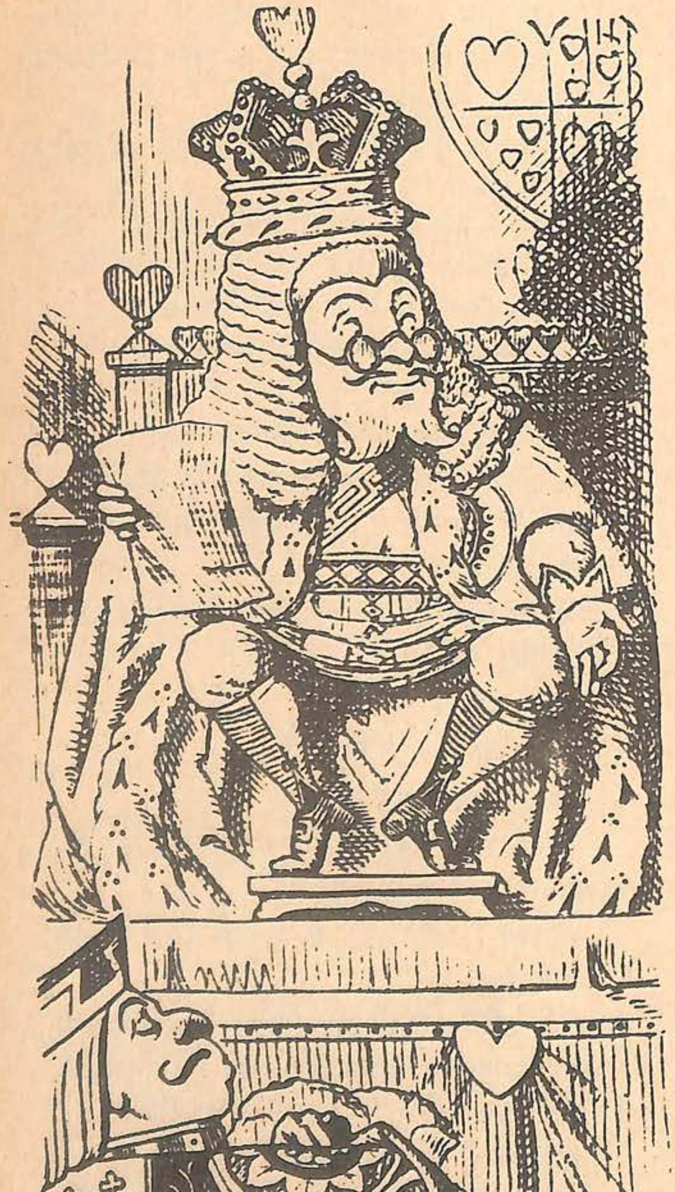

उन्हें सूचना जो उसने दी
– वह सब है मालूम हमें भी।
मैंने उस दिन राह न पाई।

यदि महिला ने बात बढ़ाई,
फिर तो मेरी शामत आई।

एक दी उस महिला को मैंने।
दो दीं उस जन को उन सबने।

तीन मुझे दीं तुमने, लेकिन
उससे सारी की सारी गिन
लीं तुमने। – था मेरा ही रिन।
इसी मामले में वह महिला
या मैं फंसता हूं तो, पहिला
हमें तुम्हारा ही है सम्बल। –
हमें छुड़ा लोगे तुम निज बल।
हम फिर होंगे जैसे थे कल।

इसके, उसके और अपन के
तुम्हीं बीच में थे आ धमके। –
यही धारणा मन में जमके
बैठ गई थी। (तब उस स्त्री पर
पड़ा न था दौरे का चक्कर)।

देखो वह जन जान न पावे,
महिला को यह अति ही भावे।

इस रहस्य को सबसे गोपन
रखना होगा। बस मेरा मन
जाने इसको, या तेरा मन।"

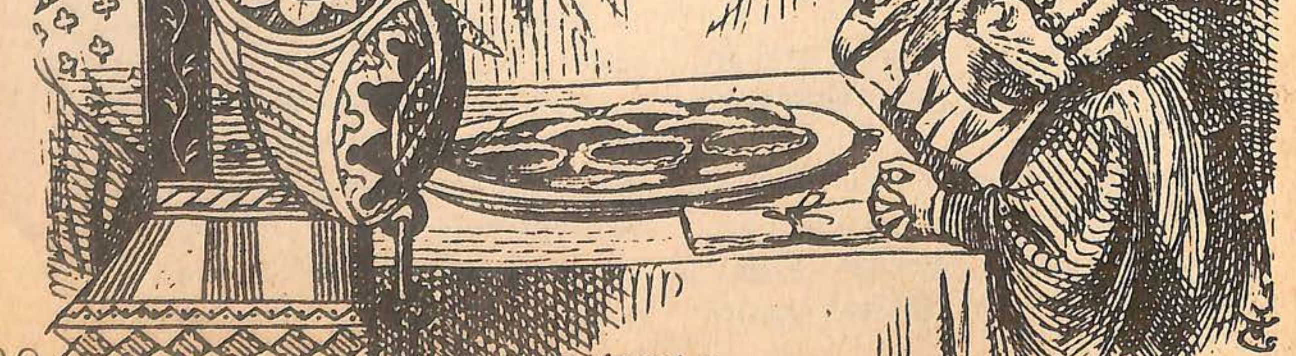

बादशाह— यह तो इस मुक़दमें में बहुत ही ज़रूरी सबूत पेश हुआ है।

एलिस— देखिए, अगर इस अदालत में कोई भी इन पदों का अर्थ बता दें, मैं अभी उसे छः पेंस दूं। इसमें कानी उंगली के नाखून के बराबर भी अर्थ नहीं है।

बादशाह ने धीरे से आप ही आप हकलाते हुए कहा, 'कैसी लंबी लमढींग गवाह है। पू-पू-पांच मील तो ऊंची हो-होगी ज़रूर! बू-बू-बाप रे बाप!'

पंचों ने अपने मन में सोचा, 'मैं शायद अब तो अपने पूरे कद में आ गई हूंगी ... करीब-करीब! उह क्या कर लेंगे बादशाह मेरा, अब?'

बादशाह पंचों से बोले, "पंचों, पिछला बयान लिख लिया?"

बहुत सी आवाजें आईं, "जी हुज़ूर! जी हुज़ूर!"

बादशाह बोला, "तो अगर इन पदों में कोई अर्थ नहीं है, तो चलो, छुट्टी हुई! हम क्यों अपना मगज खराब करें इसके पीछे?" फिर कुछ सोचकर कहा, "मगर रुको, ऐसा नहीं हो सकता। मुझको तो कुछ-कुछ लगता है कि इसमें बहुत गूढ़ अर्थ है। देखो ... लिखता है कि 'तैर नहीं सकता' ... मैं ...मैं ... पान के गुलाम, तुम तो तैराना नहीं जानते, बिलकुल ... कि जानते हो?"

पान का गुलाम— नहीं, हुज़ूर सरकार ! तैरूंगा तो डूब ही जाऊंगा, सरकार!

बादशाह बोला, "हां तो यहां से सांफ हुआ। अच्छा, आगे? 'वह सब है मालूम हमें भी'। 'हमें', यानी पंचों को। यह भी साफ है। अच्छा, अब इसके आगे? 'एक दी उस महिला को मैंने ...' बहुत खुश होकर बादशाह ने कहा, "हां, देखो मिठाइयां, किस तरह बंटीं! इसका अर्थ साफ मिठाइयां हैं!"

एलिस— पर आगे देखिए। वह कहता है कि 'दो दीं उस जन को उन सबने। तीन मुझे दीं तुमने, लेकिन उससे सारी की सारी गिन लीं तुमने।"

बादशाह ने बड़े गर्व और खुशी से कहा, "ये देखो, आ गई न यहां! ये रक्खी हैं सामने। यह तो आईने की तरह साफ है। और आगे भी देखो। 'तब उस स्त्री पर पड़ा न था दौरे का चक्कर।' "

यहां रूककर बादशाह ने अपनी ऐनक में से मलिका की ओर देखा, और बड़ी मुलायमियत से रुक-रुककर पूछा, "प्यारी मलिका, तुम्हें कभी चक्कर तो नहीं आते थे? क्यों?"

मलिका की भवें तनी हुई थीं। दांत भींचते हुए

उसने चीखकर कहा, "कभी नहीं!"

बादशाह ने इत्मीनान से कहा, "बस, अब पंच अपना फैसला दें।"

मलिका— 'नहीं, नहीं, पहले सज़ा, फिर फैसला!

इस पर एकाएक एलिस के मुंह से निकला, "कैसी अनोखी और वाहियात बात! पहले सज़ा, फिर फैसला! कहीं सुना होगा ऐसा!

मलिका— बे-अदब! जबान संभाल अपनी! खबरदार जो फिर बोली!"

एलिस भी अब ताव में थीं। उसने अकड़कर जवाब दिया, "मैं तो बोलूंगी, और फिर बोलूंगी!"

मलिका ने चिल्लाकर हुक्म दिया, "सर उड़ा दो इस गुस्ताख लड़की का!"

एलिस उसकी तरफ मुंह बिचकाकर उसी शान से बोली, "ओह, यहां कौन करता है तुम्हारी परवाह! अरे, तुम सब गिरे तास के पत्ते ही तो हो!" और उनकी रंगी हुई -सी शक्लों पर उसे हंसी भी आ गई। फिर उसने उनकी तरफ देखकर एक जोर का ठहाका लगाया जो

अदालत के पूरे हॉल में गूंज गया। सब कुछ जैसे हिल उठा और थरथरा उठा। वहां ऐसा शोर-सा होने लगा जैसे जंगल में हवा के अंधड़ में पत्ते टूट-टूटकर इधर- उधर उड़ रहे हों।

एलिस के कान में कोई बार-बार कह रहा था, "एलिस, उठो, उठो! देखो, सब सूखे पत्ते मुंह पर गिर रहे हैं। शाम हो गई। तुम तो काफी सोई। मेरा तो मोजा भी बुनकर खत्म हो गया और जो किताब मैं पढ़ रही थी वह भी। तुम अभी तक उठी ही नहीं।"

"अरे! ..." जमुहाई लेकर आंखें मलते हुए उसने देखा, "अरे, हम यहां कहां हैं ... जीजी ... तुम हो ... आह, जीजी, बहुत अजीब सा सपना देखा है मैंने कि क्या कहूं! आह ... वह सब कहां उड़ गया! मैंने वो डांटा है पान की बेगम को कि सबके छक्के उड़ गए! सारी अदालत, तास के पत्तों की तरह सारी हुकूमत छू-मन्तर हो गई! और वहां कैसे-कैसे अजीब-अजीब दोस्त मुझे मिले। ग्रिफिन ... सचमुच का ग्रिफिन, जीजी! ... और वह चेशायर पूस ..."

उसकी बातें याद करके वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"खूब छकाया उसने भी। ह-ह-ह! उसकी वह चौड़ी मुस्कराहट! और जीजी, वह हैट वाला ... उसने तो कोर्ट में ऐसे तमाशे किये कि क्या कहूं। पर बेचारे मोटू पर बेकार की पड़ी! ..."

जीजी— यह तू क्या कहे जा रही है! मेरे कुछ समझ में नहीं आया। चल चाय का वक्त हो गया है। वहीं सबको सुनाना। तू तो ऐसी पड़कर सोई कि बस! देख गाएं खेत से रंभाती हुई लौट रही हैं। कहीं दूर गिरजे का घंटा बज रहा है। पंछी भी सब अपने- अपने बसेरों को लौट चले। आओ, नहीं तो देर हो जाएगी।

एलिस— हां, और दीना पूसी भी तो मुझे ढूंढ रही होगी चाय की मेज के पास। ... आह, कैसा बढ़िया सपना था! मैं ममी को अभी सब पूरा का पूरा सुनाऊंगी। और दीना पूसी से मुझे अभी बहुत-सी बातें अकेले में पूछनी हैं।

(समाप्त)

लेखक : लुइस कैरल प्रस्तुतकर्त्ता : शमशेर बहादुर सिंह

श्री शमशेर बहादुर सिंह एक सुविख्यात कवि भी हैं। 1986 में उन्होंने अपने जीवन के पछत्तर वर्ष पूरे किए हैं। 'आश्चर्य लोक में एलिस' का यह हिंदी रूपांतर उन्होंने ही किया है। यह अंक जिन चिंताओं पर केंद्रित है उसी संदर्भ में उनकी कविता का एक अंश :

युद्ध के नक्शों को कैंची से काटकर कोरियाई बच्चों ने
झिलमिल फूल पत्तों की रौशन फानूस बना ली है
और हथियारों का स्टील और लोहा
हज़ारों देशों को एक दूसरे से मिलाने वाली
रेलों के जाल में बिछ गया है।
और ये बच्चे उन पर दौड़ती हुई रेलों के
डिब्बों की खिड़कियों से
हमारी ओर झांक रहे हैं
वह फौलाद और लोहा
खिलौनों, मिठाइयों और किताबों से लदे
स्टीमर के रूप में
नदियों की सार्थक सजावट बन गया है
या विशाल ट्रेक्टर-कम्बाइन और फैक्ट्री
मशीनों के हृदय में
नवीन छंद और लय का प्रयोग कर रहे हैं।

चित्र: 'साक्षात्कार' से साभार

रत्नेश सिंह, झाबुआ

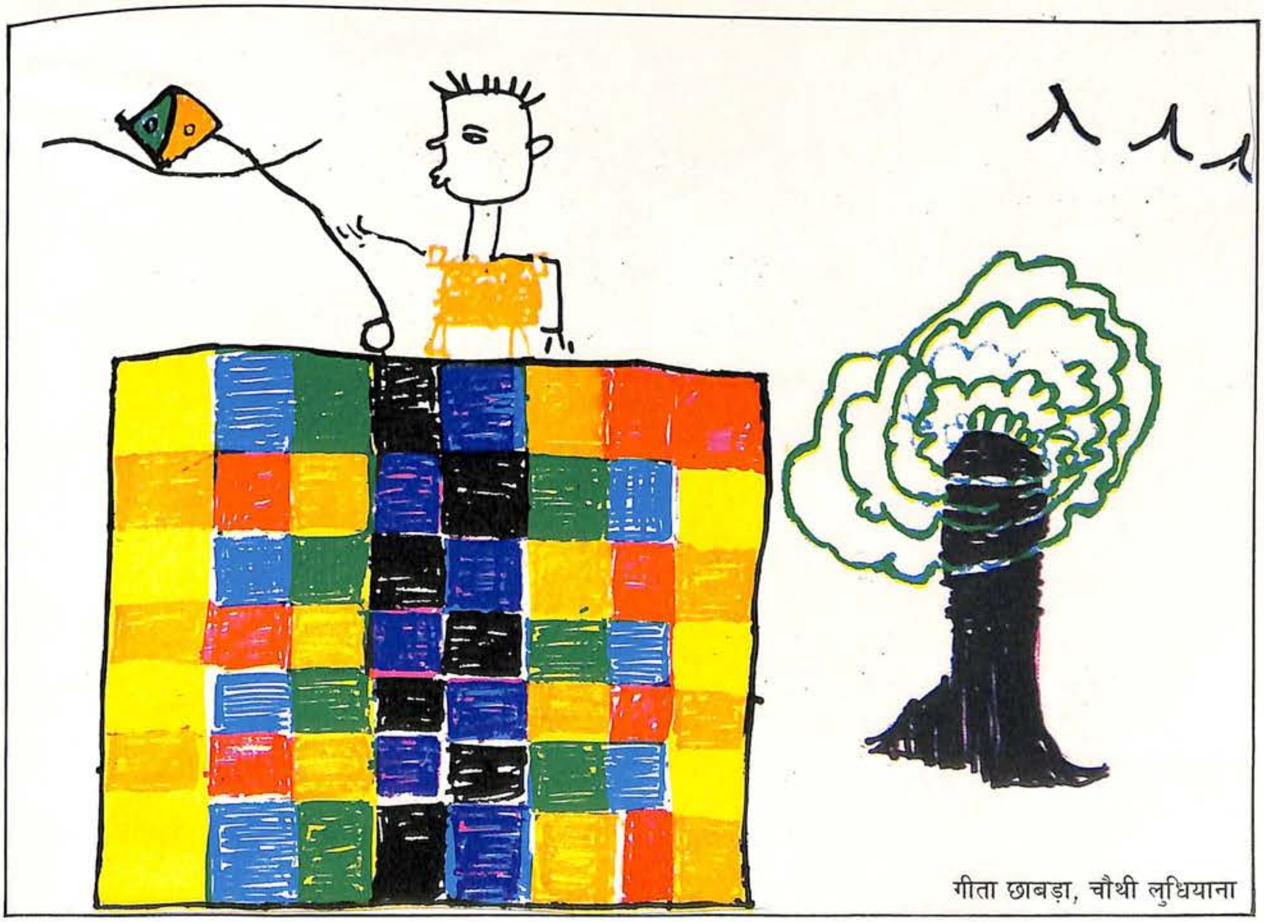

गीता छाबड़ा, चौथी लुधियाना

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87

अनीता इंदरसिंह, आठवीं मेघनगर, झाबुआ

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से